❀ श्रीगणेशाय नमः ❀

शैवप्रमोद

अर्थात्

शिव-भजन-माला ।

प्रथम भाग ।

(गणपतिवंदना)

ग़ज़ल ।

जनपाल वो कृपाल श्रीगिरिजा के लाल हैं ।
प्रिय बाल शंभु के सो बड़े ही दयाल हैं ॥
सिंदूर कांति दिव्य देह की छटा भली ।
वारणवदन विशाल नेत्र तीनि लाल हैं ॥
कुण्डल अमोल कान मुकुट शीश स्वर्ण का ।
कुङ्कुम सुचारु खौर और चंद्र भाल हैं ॥

...द दंत एक लंब उदर में त्रिवलि पड़ी।
उपवीत कंबु कंठ में मणि मंजु माल हैं॥
भुज चार शुक्क भूषण मन माहिं भावते।
पाशांकुशादि को लिये वह्नु विघ्न काल हैं॥
कटि में दुकूल पीत तड़ित तुल्य सोहता।
नूपुर अमंद पाउँ चलें मंद चाल हैं॥
निशि घोस 'चंद्रशेखर' गुण गान गावते।
लघु दास जानि सो सदा मो पै निहाल हैं॥१॥

ग़ज़ल।

हम पर कृपा महेश सदा ही बनी रहै।
जन दीन जानि कै दया मो पै घनी रहै॥
पापी पुराने हम तुम पावन पतित प्रभो।
सोई विरद निवाह की जिय में ठनी रहै॥
माँगूँ न और तुम सों वर ह्वैक दीजिए।
शुभ भक्ति प्रेम रङ्ग की नित ही छनी रहै॥
करि दूरि भूरि भेद वो गत खेद होय कै।
मति मंजु संत संग में संतत सनी रहैं॥
यहि योग 'चंद्रशेखर' हम हैं नहीं तो भी।
दासानुदास में मेरी गिनती गिनी रहैं॥ २॥

ग़ज़ल।

शंकर के जटा जूट में गंगा की धार हैं।
बालेंदु सदृश बिंदु से शोभित लिलार है॥

हैं गौर बरन पंच बदन मदन मोहने ।
दृग तीन देह पीन की शोभा अपार है ॥
भूषण भुजंग अंग अंग भ्राजते भले ।
मणि नील ज्योंहिं ग्रीव में विष को वहार है ॥
सर्वाङ्ग में विभूति की सुखमा अकूति है ।
उपवीत कंठहार वो भुज भव्य चार है ॥
कटि माहिं कृत्ति केहरि कसि कै सुहावने ।
सरदार भूत के बने वृष पै सवार हैं ॥
धारे त्रिशूल शूल को हरते हमेश ही ।
डमरू सुहसत मस्त नित्य नृत्य कार हैं ॥
वामांग गौरि की छवी मन को छकावती ।
युग बाल गोद में लिए भोला उदार हैं ॥
करुणानिधान प्राण के मेरे अधार तुम ।
लघु दीन 'चंद्रशेखर' सेवक तुम्हार है ॥ ३ ॥

ग़ज़ल ।

हर हमेशा हर घड़ी हर याद आते हैं मुझे ।
देखते मुझको दया दृग से दिखाते हैं मुझे ॥
है यदपि रहती सदा मनमें मेरे दुर्वासना ।
तौपि प्रेरि सुमार्ग में शिवजी लगाते हैं मुझे ॥
त्याग कर सत्संग हम दुःसंग को धाते सदा ।
तो भी उनसे दूर जनपालक भगाते हैं मुझे ॥
कुम्भकर्ण समान सोते नींद में हम मोह के ।

जानके निज दास करुणा कर जगाते हैं मुझे ॥
'चंद्रशेखर' हम हटे रहते सदा पदकंज से।
प्याय कै मकरंद हठि मधुकर बनाते हैं मुझे ॥४॥

ग़ज़ल।

मेरे हर पाप को हरके मुझे हरषाइए हरजी।
न अपने दिव्य दर्सन को मुझे तरसाइए हरजी ॥
यद्पि हम पातकी पूरे तद्पि अवलोकि कै निजको।
पतित पावन चरण अपने मुझे परसाइए हरजी ॥
काम क्रोधाग्नि से निशिदिन सदा संदग्ध होते हम।
सो मुझ पर स्वकृपा का जल विमल बरसाइए हरजी ॥
दुखी हैं जो नहीं जोड़ा जमा हरनाम का हमने।
दयालो दीन पर मुझसे दया दरसाइए हरजी ॥
कुलिशसे भी अधिक निष्ठुर कठिन हिरदय हमारा है।
स्वप्रति सुस्नेह उर अंतर सुभग सरसाइए हरजी ॥
न निज कर्मों का 'शशिशेखर' भरोसा आपका केवल।
सुगति सब साजिए मेरी न अब अरसाइए हरजी ॥५॥

ग़ज़ल।

भाग्य भारी जगावोगे जो हरसे लौ लगावोगे।
बला सारी भगावोगे जो हरसे लौ लगावोगे ॥
न तन से धन से या जन से कभी आराम पावोगे।
सभी सुख साँच पावोगे जो हर से० ॥
फँसे हो मोह फंदे में निकल नहिं भाजि पावोगे।

तब इस से बाज आवोगे जो हर से० ॥
न जप तप यज्ञ दानों से ये भव नर तरके जावोगे।
पार दुस्तर के जावोगे जो हर से० ॥
कुटिल कलिकाल के करसे न यों बच करके जावोगे।
तभी शुचि बचके जावोगे जो हर से० ॥
नेहसर 'चंद्रशेखर' के अगर नीके नहावोगे।
तो हर ही के कहावोगे जो हरसे लौ लगावोगे ॥ ६ ॥

ग़ज़ल।

माया महेशजी की मुझको नचा रही है।
झूठे प्रपंच सचकर जगको जँचा रही है॥
मांसादि की बनी जो मलसे भरी कुनारी।
तिनमें बलिष्ठ मेरे मनको फँसा रही है॥
रिपु कौन मीत है को सब रूप शंभु ही के।
करि रागद्वेष उनमें हमको नसा रही है॥
देता है कौन प्रभुको तजिकै भला कहो तो।
धन पात्र द्वार तो भी जनको भ्रमा रही है॥
गृह धाम नाम सुतको अपना किया किसीने।
करके ममत्व कहते उनको हमार ही है॥
धनका न बलका कुछ भी विद्याका लेश मुझ में।
मिथ्याहि गर्व हठि के चितको करा रही है॥
यद्यपि दुखी हैं अपने दुखसे दिखाय पर के।
सुख को वृथा हमारे जी को जला रही है॥

बिनती ये 'चन्द्रशेखर' करते उमा उमावर ।
बरजो विशेष बल कै सबको सता रही है ॥ ७ ॥

ग़ज़ल ।

शंकर सुहावनी है मूरति सुभग तुम्हारी ।
कोटिन मदन को मोहे मनको लुभानेहारी ॥
सुन्दर है गौर अंगा भूषण भले भुजंगा ।
छबि देति शीश गंगा जिनका महत्त्व भारी ॥
रहते स्वयं हैं नंगा तारै पिशाच संगा ।
तद्यपि लगैं सुढङ्गा गति ये विचित्र सारी ॥
पहिने नृमुंड माला कीन्हें हौ कंठ काला ।
दृग तीसरे कि ज्वाला पातक प्रबल प्रजारी ॥
शिशु सोह 'चन्द्रशेखर' शोभित त्रिशूल त्यों कर ।
मेरे हिये उमावर निजघर करो पुरारी ॥ ८ ॥

ग़ज़ल ।

अब तो मुझे दया कर दर्शन देवो पुरारी ।
दिन तो विशेष वीते आशा लगी हमारी ॥
तुमने दरश दिखाया पहिले विरंचिजी को ।
बल पाइ कै विधाता सृष्टी सकल सँवारी ॥
दूजे दरश दिखाया शुभ कर सती को तुमने ।
मन भावते हुए वर कीन्हों उन्हें सुखारी ॥
तीजे मृकंडसुत को दरसन दिया तुम्हीं ने ।
यम से बचाय उनको जग में सुयश पसारी ॥

चौथे दरस दिखाके उपमन्यु श्रेष्ठ मुनि को।
करि दीन्ह क्षीरनिधिके अधिपति रहे भिखारी ॥
अति दीन कर्म से त्यों हम हीन 'चन्द्रशेखर' ।
देखें कि आवती है कबधौं हमारि बारी ॥ ६ ॥

गज़ल ।

अब तो दरस दिखादो मुझ को पुरारि प्यारे ।
आती है याद हरदम हमको तुम्हारि प्यारे ॥
सुनते हैं आप दरसन दीना है कितनों ही को ।
फिर क्या खता हुई है कह दो हमारि प्यारे ॥
अघराशि क्या नहीं थे वह व्याध भील आदिक ।
माना विशेष हूँ मैं यह लो विचारि प्यारे ॥
अत्याल्प वोऽधिकाधिक इँधन स्वभावतः सब ।
पल में प्रचंड पावक डारे प्रजारि प्यारे ॥
यों ही कृपा तुम्हारी दुष्कृत विनाशनी है ।
आगम निगम सदा ही कहते पुकारि प्यारे ॥
अधमों को आप अपना करते हमेशही से ।
धारी कठोरता क्यों मेरे हि बारी प्यारे ॥
नहिं और 'चन्द्रशेखर' मेरी मुराद कुछ भी ।
बस वस्ल का तिहारे मैं हूं भिखारि प्यारे ॥

गज़ल ।

हैं धन्य एक जग में शंकर हमारे स्वामी ।
जो पालते हैं हरदम मुझसे महा हरामी ॥

प्रभु नाम भी निरंतर लेते नहीं जबां से ।
तो भी तो खाद्य ख़ासे देते हैं वैलगामी ॥
नहिं नैन नीच हरषे निरखें स्वरूप हरका ।
होते न तो भी अन्धे रहते सदा अरामी ॥
कमबख्त कान भी हा सुनते सुयश न शिव का ।
बदज़ात ये न तो भी होते बधिर निकामी ॥
यों ही शरीर सारा सेवा से है भी न्यारा ।
काया अधमको तो भी मिलती न नर गुलामी ॥
कैसे भी हीन जन की रखते हो शान शंभो ।
बहु बार 'चंद्रशेखर' है आपको नमामी ॥ ११ ॥

ग़ज़ल ।

हर दम हमेश हरको हम हैं मनाया करते ।
एक दीन जन यहाँ पर हम हैं जनाया करते ॥
सुनते सुयश तुम्हारी अस कीन्ह प्रण पुरारी ।
बिगड़े हुओं के गति को हम हैं बनाया करते ॥
सोइ आश आज मेरे हिय में किये बसेरे ।
अपने उधारने को हम हैं ठनाया करते ॥
रिपु काम क्रोध भारी करते मुझे दुखारी ।
शमशेर नाम शिव से हम हैं हनाया करते ॥
मुझ सा न 'चन्द्रशेखर' कोई है पातकी नर ।
दासानुदास तो भी हम हैं गिनाया करते ॥ १२ ॥

ग़ज़ल।

जपो शिव नाम को प्यारे वृथा क्यों जन्म खोते हो।
समय को खोय कर खाली गये अवसर के रोते हो॥
करी है शंभु ने दाया दई नर देह जो तुमको।
भला क्यों पाय कर पारस नहीं तुम हेम होते हो॥
मुनासिब है तुम्हें यह देह धर के ईश को भजना।
अगर हर हर प भव हर में बैल से तुम तो जोते हो॥
नहीं कुछ काम आवेगा किया पछताव पीछे का।
यकीनी बात यह मेरी जिसे तुम फिर भी टोते हो
शरण तुम 'चन्द्रशेखर' के वचन तन मन से हो जाओ।
न खाया चाहते संसार-सागर के जो गोते हो॥१३॥

ग़ज़ल।

चल सुपथ मेरे कहे दुष्पंथ जाना छोड़ दे।
शिव सुयश गावो सखे वद गीति गाना छोड़ दे॥
हर हमेशा हर घड़ी हर हर सदा सुमिरन करो।
झूठ पर अपवाद अव मुख पै ये लाना छोड़ दे॥
चर अचर सब जीव को प्रभु रूप प्यारे जान के।
प्रीति कर हर से किसी से खार खाना छोड़ दे॥
त्याग दे तकरार गरचे आय भी औसर पड़ा।
आप सह राजी से औरों को सहाना छोड़ दे॥
देनहार न है कोई उस दीनबन्धु दयालु बिनु।
द्रव्य के कारण वृथा बातें बनाना छोड़ दे॥

शक्ति भर धाये कदाचित् तीर सुरसरिका मिलै।
भूल कर भी बावली घरका नहाना छोड़ दे॥
सेव्य है शंकर-चरण श्रुति-शास्त्रके सिद्धान्त से।
मंद मति भ्रम भूलि भूतों को मनाना छोड़ दे।
'चन्द्रशेखर' निज हिए मूरति बसाओ शंभुकी॥
मूढ़ मन परनारियों का रूप ध्याना छोड़दे ॥१३॥

ग़ज़ल

कैसी लखो मन भावनी है शंभु की झाँकी बनी॥
दिशि वाम जासु विराजतीं छवि आज जगभाँ की बनी॥
सुन्दर स्वरूप अनूप हर तैसेहि शिवपत्नी भली।
रति अरु मनोज लजावनी जोड़ी जुगल बाँकी बनी॥
है शुभ्र वर्ण महेश का शैलेश कन्या स्वर्ण सी।
पटतर कहूँ केहि विश्व में नहिं और समता की बनी॥
दोऊ वसन-भूषण धरे कहि कौन सो विस्तृत सके।
देखी नहीं ऐसी सुनी शोभा सुभग काकी बनी॥
दीनवत्सल हैं दोऊ जन आर्ति आशु निवारने।
मानों दया के संग मंजुल मूर्ति करुणा की बनी॥
भक्त हित वर वृष्टि कर शंकर सुखद वारिद बने।
गौरी प्रभंजन सी सदा अनुकूल वरषा की बनी॥
मेरी बनाओ 'चन्द्रशेखर' हैं शरण हम आपके।
तुम्हरे बनाए ही प्रभो गति है बनी जाकी बनी ॥१४॥

ग़ज़ल

हमारे शंभु की कैसी बनी बाँकी छटा प्यारी।
बिराजे बाम दिशि जिनके शैलपतिकी सुता बारी॥
जटा में गंग छाने भंग रहते हैं सदा भोले।
लखो लोनी त्रिलोचन की अनोखी है लटक न्यारी॥
बाल-बिधु भाल में भ्राजै गले में माल मुंडों की।
मनोहर कंठ विष सोहै मनो मणि नील छविधारी॥
भले लागें भुजंगों के विभूषण अंग अंगों में।
कलेवर कांति को देखे करोरन काम द्युति हारी॥
कृत्ति केहरि कसे कटि में सके कहि कौन शोभाको।
गोद गणपति षडानन को लिये सौंदर्य अवतारी॥
बरद असवार वर दाता अखिल सुरके समूहोंको।
डिमिक डिम डिम डमरु ध्वनि को करें सानंद त्रिपुरारी॥
स्वजन समुदाय मुद दाता विधाता विश्व धाताके।
रचें नित नृत्य हरहर्षित लिये सँग भूत भयकारी॥
बसो उर माँझ में मेरे आशु अब आय कर शंकर।
'चंद्रशेखर' तुम्हारे पै जाँउ' बहु बार बलिहारी॥१९॥

ग़ज़ल।

हमारे शंभु की कैसी छटा निराली है।
अहाहा आज क्या हरने छबी बनाली है॥
लखो मुख पंचकी कैसी अनूप है शोभा।
गौर तन कांति भस्म श्वेत सी रमाली है॥

बाल बिधु भाल खौर लाल किये केशर का।
देवसरिधार जटाजूट में बहाली है॥
दिव्य त्रय नेत्र बह्नि शशि दिनेश के सोहैं।
भंग के रंग की तिन मैं गजब गुलाली है॥
माल नरमुंड की विशाल ग्रीव में राजै।
कंठ विष नीलताहु चारुता बढ़ाली है॥
अंग-अंगों में हैं भूषण भले भुजंगों के।
व्याघ्र के चर्म से खुबी कमर कसाली है॥
बाम वर अंक शैलकी सुता विराजी हैं।
दाहिने गोद वक्रतुंड को बिठाली है॥
बैल बहु वृद्ध पै सवार आप हैं भोला।
विष्णु-अज-शक्र-सेव्य युग्म अंघ्रि लाली है॥
मिटे मद मोह ताप तीनि 'चन्द्रशेखर' के।
जब से मनहारि मूर्ति हीय मैं बसा ली है॥१७॥

ग़ज़ल।

भजोगे हर को तो हर हर बलाय हर लेंगे।
शरणमें आपनी तुमको स्विकार कर लेंगे॥
पाप के पुंज हैं जितने जुरे जमाने के।
चिकल है वेगिही आपी वो राह धर लेंगे॥
सुकृत सुख सौख्य सद्बुद्धि सद्गुणादिक जो।
बिलखि वर वास को उर में तुम्हारे घर लेंगे॥
बचोगे तुम त्रिताप के कराल ज्वालों से।

सुभग हिय माँहिं शांतिको जो आप भर लेंगे॥
तरे भवसिंधु को श्रम हीन 'चंद्रशेखर' जू।
शंभु-पद-पद्म पीन पोत जो पकर लेंगे॥ १८॥

ग़ज़ल।

हम हमेशाहि श्रीहर को हिये मनाते हैं।
अपने उर ऐन के स्वामी उन्हें बनाते हैं॥
उन्हीं का आश भरोसा हमें उन्हीं का है।
नहीं औरों से कुछ आधीनता जनाते हैं॥
उनके पद-कंज का अवलम्ब है मुझे भारी।
और के पैरों कभी शीश हम नवाते हैं॥
ज्ञान की गम्य नहीं योग को न जाने हम।
स्वमति को सदा सुस्नेह में सनाते हैं॥
न इस योग्य है करतूत 'चंद्रशेखर' की।
तो भी लघु दास के दासों में हम गनाते हैं॥१६॥

ग़ज़ल।

हमतो हर रंग रंगे लोक में हँसी सो हँसी।
बुद्धि गुण लेश के बखान में फँसी सो फँसी॥
आन यशगान तान को अब हम सुने न सुने।
भोरि भलि शंभु-कीर्ति श्रोत्रमें धँसी सो धँसी॥
तंत्र शिर-मौर और मंत्र को जपें न जपें।
चारु शिव-नाम-माल जीह में लसी सो लसी॥
भर्ममय मर्म भरे कर्म का करें न करें।

करि भव किङ्करता करन में कसी सो कसी ॥
ध्यान छविखान काहु अन्य को धरें न धरें।
मूर्त्ति 'शशिमौलि' मंजु हीय में बसी सो बसी ॥२०॥

ग़ज़ल।

न कभी गर्व बढ़ाना ये कहे जाते हैं।
किसी का दिल न दुखाना ये कहे जाते हैं॥
पुण्यमय देह पाय प्रेम सों पुरारी के।
चरण में चित्त लगाना ये कहे० ॥
वृद्ध गुरु विप्र सदा संत पद-कंजों में।
स्नेह सह शीश नमाना ये कहे० ॥
शक्ति भर दौरि मिले देवसरि का तीर तुझे।
भूलि घर में न नहाना ये कहे० ॥
आय गृह सूत्र पड़े अपने कर माँहिं तिसे।
नेकचलनी से चलाना ये कहे० ।
वर्ण अनुरूप धर्म कर्म की प्रणाली जो।
यत्न युत सोपि निभाना ये कहे० ॥
न होने के हैं किसी के न हुये पुत्रादी।
मोहमय वृत्ति न लाना ये कहे० ॥
त्यागि गुण-गान ज्ञान-खान 'चंद्रशेखर' के।
और गानों को न गाना ये कहे जाते हैं ॥२१॥

ग़ज़ल।

जो सुख सौख्य अर्थ धर्म मोक्ष काम चहो ॥
तो मन राम कहो राम कहो राम कहो ॥

पुण्यमय देह ये पाई है ईश्वरीय कृपा।
अब तो निर्भीत होय शांति में विश्राम लहो॥
जन्म-जन्मों के जुटे पाप पतंगे जितने।
नाम बहु दीप ज्वाल ज्योति में तमाम दहो॥
कौन जप योग यज्ञ ज्ञान का गुमान करे।
सभी ही भांति वर्तमान समय बाम महो॥
जान भवसिंधु पार चाहु भले 'शशिशेखर'।
पुष्ट करि पोत ज्यों हि पादपद्म थाम रहो॥ २२॥

ग़ज़ल।

श्रीराम भजो राम भजो राम भजो हो॥
सब काम तजो काम तजो काम तजो हो॥
पाकर सुदेह दिव्य न करते करम धरम।
टुक तो गलानि लाय कै मनमाहिं लजो हो॥
कलिकाल है कराल ये जप तप बनै नहीं।
जिय जानि सार भक्तिको शुभ साज सजो हो॥
करि दूरि द्वैतभाव भूरि भेद टारि कै।
अति प्रेम सो पुरारि के पदकंज यजो हो॥
कहते ये 'चन्द्रशेखर' भूले पड़े हो क्यों।
औसर व्यतीत होत है अब नेक न जो हो॥ २३॥

ग़ज़ल।

अब छोड़ दे विहार को कुछ कार यार कर॥
कहते भले की हम इसे स्वीकार यार कर॥

क्या इस लिये पाया है तन जर माल जोड़ तू।
तज धर्म के धंधों को बस व्यापार यार कर॥
सुत औ सुता दारादि के फँस करके मोह में।
भूले उसे आये हो जो इकरार यार कर॥
यह अति चलने की नहीं जै दिनों चले सो चले।
बदतर बझोगे ईश से इन्कार यार कर॥
खुब सोच और विचार के लखि देशकाल को।
मन में जचे तो बात का इतवार यार कर॥
क्यों बने व्रत ध्यान जप तप वक्त ही विपरीत है।
मात्र गति शंकर शरण आधार यार कर॥
'चन्द्रशेखर' उर अमित अनुराग पूरि कै।
हर दम हरी हर हर हरी उच्चार यार कर॥२४॥

ग़ज़ल।

मुदित मन हो महेश्वर को मनाले जिसका जी चाहे।
स्वगति बिगड़ी हुई पल में बनाले जिसका जी चाहे॥
सिवा सुमिरन सदा शिव के नहीं कुछ सार दुनिया में।
समझ वो सोच कर दिल में जमा ले जिसका जी चाहे॥
अमित अघराशि-वृन्दों को जुरें जो जन्म-जन्मों के।
सकृत लै नाम शंकर का नशा ले जिसका जी चाहे॥
नहीं कुछ काम आने के करो जिनका जतन निशिदिन।
बृथा सुत वित्त में चित को फँसाले जिसका जी चाहे॥
विषय की वासनाओं से नहीं सुख शाँति मिलने की।
तृषा मृग तृष्णा के जल से बुझाले जिसका जी चाहे॥

लोक आनंद वो सुख कर प्रगट परलोक को हित कर।
सुभग सतसंग में मति को सनाले जिस्का जी चाहे॥
विष्णु अज शक्रसुर सेवित अगम भवसिंधु कहँ बोहित।
चरण में शीश 'शशिशेखर' नमाले जिस्का जी चाहे॥२५॥

ग़ज़ल।

चित से कभी न शंकर मुझको उतार देना।
मैं हूँ पड़ा शरण में मुझ को उबार देना॥
पावन पतित पुरातन परमात्मन् बिदित हो।
पतितों कि श्रेणि से मत मुझ को निसारदेना॥
प्रभु दीन पालने की बर बानि आप की है।
भ्रम वस कहीं न हे हर मुझ को बिसार देना॥
त्रय ताप मोचनी है चितवन तेरी त्रिलोचन।
दृग कोर से कभी तो मुझ को निहार देना॥
तुम्हरी उदारता को जानै है 'चन्द्रशेखर'।
माँगै है भक्ति अपनी मुझ को अपार देना॥२६॥

ग़ज़ल।

मैं दीन हूँ तन छीन हूँ शुभ कर्म हीन हूँ।
अघ तीन हूँ लवलीन हूँ मन का मलीन हूँ॥
कामी कुटिल कुचालि क्रूर कोप कोष मैं।
मशहूर मत्सरी महा मदमस्त पीन हूँ॥
लोभी हुँ लालची हुँ मैं लंपट बड़ा लबार।

व्यभिचारि क्वारि गामि विषय वारि मीन हूँ ॥
बदकार हूँ बटपार हूँ विख्यात हूँ बेकार।
पेटू पखंड पंथ का पंडित प्रवीण हूँ ॥
गुस्ताख हूँ गाफ़िल हुँ गुनहगार मैं गरीब।
औगुण का हूँ आगार मैं रंचक गुणी-न हूँ ॥
कम्बख़्त हूँ कायर हुँ कुसंगी हुँ मैं कुपात्र।
बुज़दिल विश्वासघात से भी मैं वरी न हूँ ॥
याचक हुँ 'चन्द्रशेखर' द्वारों का आप के।
माँगु चरण से दूर तुम्हारे कभी न हुँ ॥ २७ ॥

ग़ज़ल।

अब तो समय को यों ही बिताना नहीं अच्छा।
सुत बित्त में हि चित को फँसाना नहीं अच्छा ॥
कह आये थे करने को क्या क्या करने लग गये।
ईश्वर से कौल करके भुलाना नहीं अच्छा ॥
बायू लगी संसार की माया ने घेरली।
जीवन रतन को रज में मिलाना नहीं अच्छा ॥
भूले भरोसे किसके तुम हो किस गुमान में।
न्यायी से चलाकी का चलाना नहीं अच्छा ॥
यह सोचि 'चंद्रशेखर' हर के शरण हुये।
इस युग में गीत ज्ञान के गाना नहीं अच्छा ॥ २८ ॥

ग़ज़ल।

गंगे तेरे तरंग की महिमा महान है।

शोभा सुरेश धेनु के पय के समान है ॥
जोरे जो जन्म जन्म के अघ राशि रहे सो।
देखेहि दृष्टि सों तुम्हैं पातक परान है ॥
पीते पुनीत वारि को वीते विकार सब।
ही—ते मिटे विषाद वो मन शांति मान है ॥
गोते लगाते ही तुरत काया पलट गई।
सोइ देह में होने लगा देवत्व भान है ॥
तेरी शरण सिधारने सब काज सध गये।
श्रम के विना मिली सुपद संपत्ति खान है ॥
पाये प्रमोद वो जो कि पाते सुजान जन।
इस्से बिशेष और क्या कैवल्य ज्ञान है ॥
सादर ए 'चन्द्रशेखर' करने निछावरें।
तुझ पै त्रिलोक पूजिता तन मन व प्राण हैं ॥२६॥

ग़ज़ल।

सुनो हो शंभु मेरा कोई मदद गार नहीं।
नाव मझधार पड़ी डाँड वो पतवार नहीं ॥
बारि निधि जक्त मैं भ्रमके भँवर भ्रमाय रहे।
बुद्धि बौराय गई चलता कोई चार नहीं ॥
घोर तर ताहु पै कलि का तुफ़ान जारी है।
लुप्त शुभ मार्ग हुए सूझता किनार नहीं ॥
मोह वड़वाग्नि का असह्य ताप व्याप रहा।
हाय हा हा के सिवा दूसरा सहार नहीं ॥

वेगि अनुकूल ह्वै बचाय लेहु 'शशिशेखर'।
न तरु आज अब तो होवता उबार नहीं ॥ ३० ॥

ग़ज़ल।

शिव नाम जपने के लिए यह जीह जिनका डुल गया।
पूर्व के पुण्यों का बस उनके किवाँड़ा खुल गया॥
उनके पुरातन पाप का बिलकुल पता लगता नहीं।
की जो भारी फ़ुंड थी सो अब किधर वो कुल गया॥
उनकी बहुत सी वासनाएँ हैं जो वैरिन रूपिनी।
दुश्मन बुरे कामादि खल उनका भि दल दल ढुलगया॥
उनके अहित करने के कुल सामान हित कर होगए।
वो सुखों का खान हो कर दुख सब उसका भुलगया॥
जितनी कुमति उर में रही उनके सुमति सब होगई।
वो भजन में मग्न हो सत्पुर्ष सङ्गत घुल गया॥
प्रभुकी कृपा पूरे परम पद का वो अधिकारी भया।
'चंद्रशेखर' से भि-शठका उर अमल हो धुलगया॥ ३१ ॥

ग़ज़ल।

मुझे एक शंकर शरण है तुम्हारा।
सुनायों सुयश निज श्रवण है तुम्हारा॥
कि तुम दीनबंधो सदा के हो स्वामी।
यही आश पै दीन जन है तुम्हारा॥
महापाप से हम भरे हैं गे भोला।

समुद्धारने का परन है तुम्हारा ॥
त्रितापों से हम तप रहे हैं पुरारी।
दया दृष्टि शांति करन है तुम्हारा ॥
फँसे मोह के फंद हम नाम शंभो।
जगज्जाल से निस्तरन है तुम्हारा ॥
महासिंधु संसार बड़वा कली में।
पड़े बानि पतितोद्धरन है तुम्हारा ॥
ए भव चक्र भ्रमके दुखी हो रहे हम।
ही हर भावना दुख हरन है तुम्हारा ॥
प्रभो जान करके प्रणत पाल तुमको।
गहे 'चंद्रशेखर' चरण हैं तुम्हारा ॥३२॥

ग़ज़ल।

सदा शिव के अब हमतो हो ही चुके हैं।
हिए प्रेम के बीज बो ही चुके हैं ॥
अब हम धाम धन तन को खोएँ न खोएँ।
प्रबल पाप पुंजों को खो ही चुके हैं ॥
करें आश नर की नहीं या करें हम।
जब हरकी दया दृष्टि जो ही चुके हैं ॥
टटोलें कहाँ तक अब हम शास्त्र सागर।
महारत्न हर नाम टोही चुके हैं ॥
अब हम दुःख दर्दों को रोएँ न रोएँ।
निजानंद के अश्रु रो ही चुके हैं ॥

सुमन सेज अब चाहे सोएँ न सोएँ।
सु शांती के हम गोद सो ही चुके हैं॥
फँसा था बझो 'चंद्रशेखर, जगत में।
मेरा मन महादेव मोही चुके हैं ॥२३॥

ग़ज़ल।

हर शरण आना चहो तो हर कहो जी हर कहो॥
हर को पहिचाना चहो तो हर कहो जी हर कहो॥
भंग और धतूर आदिक पीवते नित मेव, हर।
प्रेम मद छाना चहो तो हर कहो जी हर कहो॥
उलझनें संसार की सब काट कर पल मात्र में।
हर से अरुझाना चहो तो हर कहो जी हर कहो॥
धाम धन जन ग्राम ममता पूर्णतः परित्यागि कै।
हर को अपनाना चहो तो हर कहो जी हर कहो॥
सुत सुता दारा सुहृद की प्रीति उर से दूर कर।
हर से लौ लाना चहो तो हर कहो जी हर कहो॥
सुर असुर समुदाय सबको वद्ध कर शिरनाय तज।
इष्ट हर माना चहो तो हर कहो जी हर कहो॥
'चंद्रशेखर' हर चरण पर आशु तन मन वारि कै।
हर में मिल जाना चहो तो हर कहो जी हर कहो ॥२४॥

ग़ज़ल।

तब हम सुविरागी बनेंगे होगी जब हर की कृपा॥

अतिहि बड़भागी बनेंगे होगी जब हर की कृपा ॥
यज्ञदान व्रतादि तप जप यागयुत करते हुए।
कर्म फल त्यागी बनेंगे होगी जब हरकी कृपा ॥
संचिताघ महान वन कहँ दहन कर पल में मेरे।
सुकृत दावागी बनेंगे होगी जब हर की कृपा ॥
बाष्प पूरित नेत्र गद्गद कंठ तनैं पुलकावली।
ऐसे अनुरागी बनेंगे होगी जब हर की कृपा ॥
'चंद्रशेखर' आशुहीं अतिशय कृतारथ रूप हम।
शंभु पदलागी बनेंगे होगी जब हर की कृपा ॥ ३५ ॥

ग़ज़ल।

आए हैं दुनिया में हम हर सुयश गाने के लिए ॥
हर समर्पण कर्म कर बंधन कटाने के लिए ॥
जो सुकृत की राशि दुर्लभ देव नर काया मिली।
हर शरण होकर उसे सार्थक कराने के लिये ॥
काम क्रोधादिक पतंगों को तृणक में, 'आग' सो।
भावना हरकी भभकती में जलाने के लिए ॥
पुत्र धन सुख स्वर्गकी तरु वासना सह शाख को।
हर मेहर हथिआर ले जड़ से मिटाने के लिए ॥
'चंद्रशेखर' ज्ञान योग विराग सब का सार जो।
हर की हमराही में रह हर के कहाने के लिए ॥ ३६ ॥

ग़ज़ल।

शंभु में भक्ती न जिनकी शंभु में भक्ती नहीं

कल्प लौं मुक्ती न तिनकी कल्प लौं मुक्ती नहीं॥
सार है श्रुति चार का शिव नाम सुमिरन मानिए।
आन कछु युक्ती न हित कर आन कछु युक्ती नहीं॥
शुद्ध चित शुभ संत जन साखी निरंतर भाखते।
काव्य की उक्ती नहीं यह काव्य की उक्ती नहीं॥
है प्रगट परभाव इसका आदि और अनादि मों।
बात यह गुप्ती नहीं है बात यह गुप्ती नहीं॥
'चन्द्रशेखर' चरण सेवन नेह शुभ नित कीजिए।
भूलि करु सुस्ती न इसमें भूलि करु सुस्ती नहीं॥ ३७॥

भजन

नहिं तुमने भजा हर नाम, हा राम ए क्या किया॥ नहिं०॥
है बाल पन को खेलों में खोया थे बेखबर बहुयाम॥ हा०॥
त्यों तरुणापन भी तरुणिन में कर करके ऐशो आराम॥ हा०॥
या अपने तनकी की कुल तयारी जोड़े खुशी धनधाम॥ हा०॥
क्या बूढ़े पन में होगा किया कुछ होवोगे जब कि निकाम॥
आँखों के अँधे कानों के बहिरे जावैं सिकुड़ सब चाम॥
यों दिन को गिनते ही होंगे रुखसत बिना किये शुभ काम॥
न ज्वाब देते भी फिर बनेगा यम से पड़े जब काम॥
अभी भी गरचे हो ख्याल मन को तो चेत कर सुबु शाम॥
में ही बनो तुम नेहीं सदाशिव के 'चंद्रशेखर' गुलाम॥ ३८॥

भजन

अब बीति बयस गै तोर रे, भजु भोला भोला।

शारद शेष जासु गुण गावैं, नित नित तौपै पार न पावैं।
नावैं शीश मनावैं दुहुँ कर जोर रे॥ भज्ञु भोला भोला॥
बिरद विश्व विख्यात जासुको, कोउ समता नहिं करे तासुको,
आशु दीन पर करैं कृपा की कोर रे॥ भज्ञु भोला भोला॥
जो जन के जीवन को धन है, प्रणतारति भंजन को प्रण है,
धन्य धन्य सो देव दयामय मोर रे॥ भज्ञु भोला भोला॥
पल में ताको पाप नशावैं, बिनु श्रम पुण्य पुन्ज अधिकावैं,
आवैं जो प्रभु शरण कपट छल छोर रे॥ भज्ञु भोला भोला॥
तन धन धाम बाम सुत के मा, जनि रे मूढ भूलि करु प्रेमा,
प मो अहै विपत्ति शोचु अति घोर रे॥ भज्ञु भोला भोला॥
अतिशय सुलभ मुक्ति हू जामें, क्लेश न कछु 'शशिशेखर, तामें,
नाम शंभु को जपहि बहुत वा थोर रे॥ भज्ञुभोला भोला।३९।

भजन

रट लावो हो हर हर की॥ रटलावो०॥
पूरब सुकृत समूह जगे जब भई कृपा शंकर की।
तब करि दया दीन प्रभु तो कहँ देह मनोहर नर की॥रट०॥
यदपि शरीर पुण्य मय पावन दुर्लभ लही अमर की।
तदपि न भजन करत हिय हुलसे मतिगति ताकी खरकी॥रट॥
यह धन धाम ग्राम आदिक लै जितो जमा है घर की
सो सब साँच काँच नहि नेकहु थाती जानो पर की॥ रट०॥
यहु सुख खान सुजान जानि जिय तजि कै कुबुधि कुतर की।
शशिशेखर, सह प्रीति सुकीरतिगावो गिरिजा बरकी॥रट॥४०

भजन

हमें हर जी हो दरशन दिखाया करो ॥ हमें हर जी० ॥
माथे मुकुट जटा को तामें सुरसरि धार बहाया करो ॥ हमैं० ॥
मंजु मयंक भाल भल भ्राजत तीनि नयन छबि छाया करो ॥हमैं०॥
गौर बरन मन हरन सुभग तन विमल बिभूति रमाया करो
॥ हमैं०॥ राजति वाम अंग गिरिजा अति शोभा शुभ सरसाया
करो ॥ हमैं० ॥ भूषण बिबिध ब्याल कुंडल को भाल गरे लट
काया करो ॥ हमैं० ॥ वाहन वृषभ सवार सदा कर डिम डिम
डमरू बजाया करो ॥हमैं०॥ प्रेत पिशाच संग शिव शंकर निज
दासन को लुभाया करो ॥हमैं०॥ कहत 'चंद्रशेखर' उर अंतर
सुन्दर रूप बसाया करो ॥ हमैं० ॥ ४१ ॥

भजन

भोला मेरे हैं उदार, उदार मेरे भोला० ॥
पूजहिं बेलपात चंदन जल चाउर लैकै तुषार ॥ उदार० ॥
जो जन तिनहिं समपि सदाशिव आनन्द देवें अपार ॥ उदार०॥
मेटहिं त्यों बिनु शंक रंक के अंक लिखे जो लिलार ॥ उदार०॥
जनम जनम की बिगड़ी गति को पल महँ देवैं सुधार॥उदार०॥
परि हरि देव' दयाल मूढ़ नर इत उत धावें बेकार ॥उदार०॥
कहत 'चन्द्रशेखर' मन मूरख शंकर शरण सिधार ॥ उदार०४२॥

भजन

जावों जावों शंकर भोला तुम पर वारना हो ॥ तुम पर० ॥

चौदह रत्न सिंधु ते जबहीं निकस्यो महा गरल हू तबहीं,
डरपे सब लखि पियो देव हित कारना हो ॥ तुम पर० ॥
ऋषि मृकंड सुत अल्प आइ को, जानिकियो प्रभु शरण ताहिको।
यम ते लियो बचाय भक्त प्रति पालना हो ॥ तुम पर० ॥
एक बाण त्रिपुरा सुर जारे, जालंधर अंधक गज मारे,
सानुकूल सब सृष्टि कियो दुख टारना ॥ तुम परवारना हो ॥
अगिनित जनके कष्ट निवारे, जो आरत ह्वै तुम्हैं पुकारे॥
विरद विश्व विख्यात विरतिनिरवारना हो ॥ तुम पर० ॥
प्रबल पातकी पुन्जन तारे, यश समूह त्रिभुवन विस्तारे।
गावैं गुण श्रुति चार अधम उद्धारना हो ॥ तुम पर० ॥
अस कीरति कानन सुनि पाए, शरण 'चन्द्रशेखर' हम आए।
मो शिर सदा महेश कृपा कर धारना हो ॥ तुमपर० ॥ ४३ ॥

भजन

जिसने हर नाम उचारा सो हुआ जगत से न्यारा ॥
है शिव नाम सार ग्रंथन को, वेद पुराण पुकारा ॥
जो करि प्रेम जपत निशिबासर, सो सब काज सँवारा ॥सो०॥
भवसागर अति अगम ताहि महँ, कलि तूफ़ान करारा।
शिव सुमिरन दृढ़ पोत पकरु मन, सब बिधि सुखद सहारा।सो०॥
जो तप योग गुमान ज्ञानके, होय रहे मतवारा।
यामें नहिं संदेह नेकहू, बूड़हिं सो मझधारा ॥ सो हुआ० ॥
अखिल लोक नायक प्रभुशंकर परम समर्थ उदारा।
'शशिशेखर' तिनके गुण गावहु, यहि युग एक अधारा ॥४४॥

भजन।

जो चाहै निज कल्याण। हर का हर दम कर ध्यान॥
जग की अगनित भूल भुलैया, मैं क्यों फिरत भुलान॥
सुत वित नारि भ्रमित मति कीन्हो जान्यो सुखकी खान॥हर॥
नहिं ये मीत काम क्रोधादिक नर नीके पहिचान।
रिपु सम जानि त्यागु अजहूं ते, लोभ मोह अभिमान॥हरका॥
नहिं सिधि होय किये कलि एकहु योगयज्ञ विज्ञान। चलु चित
चेति सुगम मग तेहिते, जेहि पथ जात सुजान॥ हरका०॥
श्रुति सिद्धांत संत संमतिले यहि हित कर जिय जान। करु
हिय हरखि प्रीति सह संतत 'शशिशेखर' गुणगान॥हर०॥४५॥

भजन

शंभु सुहात, शिवा सँग सुन्दर॥
मंजुल गौर बदन शंकर को, निरखत कोटिन काम लजात।शिवा॥
भाल विशाल बाल शशि शोभत, सुरसरि शीश सदा लहरात॥
शिवा०॥ लोचन तीन भीति भव मोचन, चितवत ही अघ ओघ
नशात॥ शिवा०॥ भूषण व्याल माल मुण्डनकी, अवलोकत
मन मोर लुभात॥ शिवा०॥ अंक युगल बालक भल भ्राजत,
अल्प बयस अरु कोमल गात॥ शिवा०॥ देखत दृग मोहनि
हर मूरति 'शशिशेखर' नहिं नेक अघात॥ शिवा०॥४६॥

भजन।

शंभु दाता निवाहे जाता॥

जब से शरण भयों शंकर के, तब से सुख दरसाता ॥ निबा० ॥
जनम जनम के ओरै अघ को, ज्यों रवि तमहिं नशाता ॥ निबा० ॥
बिन कीन्हें जप योग यज्ञतप, संतत सुकृत बढ़ाता ॥ निबा० ॥
करनी कठिन कराल काल कलि, भलि मरजाद बनाता ॥ निबा० ॥
दिन प्रतिदिन छिनर दाया करि, नेह नवल सरसाता ॥ निबा० ॥
'शशिशेखर' हर पद सरोज में, बार बार शिर नाता ॥ नि० ॥ ४७ ॥

भजन ।

तुम बिनु कोउ नहिं मेरा, शंकर ॥
स्वारथ रत जग जीव अखिल यह, मैं बहु भाँतिन हेरा शंकर ॥ तुम० ॥ धन धरनी बिलखे बिनु नातेहि समुझत ताहि सगेरा शंकर ॥ तुम० ॥ दीन मलीन हीन सगके मग करत कबहुँ नहिं फेरा शंकर ॥ तुम० ॥ सबलहिं करत सहाय पक्ष कोउ लेत न निबलन केरा ॥ शंकर ॥ तुम० ॥ अस अनुमानि ग्लानि करि सब सों शरण गह्यों मैं तेरा शंकर ॥ तुम० ॥ 'शशिशेखर' प्रभु दास त्रास हरि करहु हमहिं निज चेरा शंकर ॥ तुम० ॥ ४८ ॥

भजन ।

भजो मन शंकर राम हरी, महा भव व्याधि तिहारी टरी ॥ भजो ॥
जैसेहि शंभु सदा शिव मेरे दीनन दुःख हरी।
तैसेहि कृष्ण कमल दल लोचन जन प्रतिपाल करी ॥ महा० ॥
सुर सुरभिन अरु संत सज्जनन पर जब भीत परी।
तब करुणाकरि हरि आरतिहर बहु सुख शाँति भरी ॥ महा० ॥

और न देव दयाल अपर अस मानहु बात खरी।
सेवहु सेव्य युगल पद संतत बनहिं सबहिं बिगरी ॥ महा० ॥
अतिहि अभेद अखेद चित्त करि प्रभु पग शीश धरी।
'शशिशेखर' शरणागत माँगत हैं नरजी तुम्हरी ॥ महा० ॥४६॥

भजन !

निकसि भागा, धरि लावै को हंसा ॥
बैठि रहे बहु गुणिजन घेरे, बुद्धि बिकाश न कछु लागा ॥ धरि० ॥ जुरि कै जोय मातु पितु पूतन सरुक बैठि छेड़ीं रागा ॥ धरि० ॥ कोउ कह हाय छरीं छलि मो कहँ बोरि दुःख सागर माँ–गा ॥ धरि० ॥ कह कोउ सो रिपु रहेउ पूर्व को मोहिं वृद्धता महँ त्यागा ॥ धरि० ॥ मिलि कै गोति परोसि मीत सब पिंजर माहिं धरी आगा ॥ धरि० ॥ कोउ न पूँछु विहंग विपति को देश भदेश कहाँ कागा ॥ धरि० ॥ बाँटि लिये धन अधिकारिन मिलि तिन कर भोग भले जागा ॥ धरि० ॥ 'शशिशेखर' अवलोकि असस गति अजहुँ भजै हर हत भागा ॥ धरि० ॥५०॥

भजन ।

शरण शिव शंकर का सच्चा, अपर जन का आश्रय कच्चा ॥
जब तोहिं गर्भ माहिं धारण, करि, मातु भई जच्चा।
तबहिं पोषिबे हित तोकहँ युग पयनिधि जिन रच्चा ॥ शरण० ॥
लटकि अधोमुख तहँ तु ताप सहि पीड़न ते पच्चा।
करि दृढ़ कौल विनीत बाँधि करि बहिरान्यो बच्चा ॥ शरण० ॥

क्रमशः बाढ़ि बाल तरुणाई तिय हित नित नच्चा।
भूल्यो क्लेश करार बिसरियो बनि बैठ्यो चच्चा ॥ शरण० ॥
सुत वित नारि हेत अधरम करि परयो पाप गच्चा।
'शशिशेखर' पद पकरि अजहुँ जड़ उभरि होय उच्चा ॥ शरण ॥ ५१

भजन।

भोलानाथ दयाल हमारे ॥
जापर द्रवहिं कृपाल उमावर ताहि रहत सब भाँति सम्हारे ॥
भोला० ॥ नाथ अनाथ संत सुख दायक दासन के प्रिय प्राण अधारे ॥ भोला० ॥ पावन पतित अधम उद्धारन दीनन के प्रभु हैं रखवारे ॥ भोला० ॥ जन रंजन प्रणतारति भंजन शरणागति प्रतिपालन हारे ॥ भोला० ॥ आशुतोष निर्दोष धवल भल कीरिति बिमल त्रिलोक पसारे ॥ भोला० ॥ उर अंतर हर बसहु निरंतर 'शशिशेखर' मन मोहन वारे ॥ भोला० ॥ ५२ ॥

भजन।

कब देहो मोहिं दरश पुरारे ॥
मंजु मुकुट शिर सोह जटा को भाल कलानिधि ज्योति पसारे ॥
तीनि नयन गुण अयन लसत हैं कंठ हलाहल लागत प्यारे।
गौर बरन बर बदन बिलोकत कोटिन कोटि मदन मन हारे ॥
सुन्दर श्वेत भस्म तन भ्राजत वाम बिभाग युवति शुभधारे।
भूषण बिबिध भुजंग संग महँ प्रेत पिशाच भूत भयकारे ॥
कहत 'चंद्रशेखर' उर अंतर बसहु निरंतर शंभु हमारे ॥ ५३ ॥

भजन।

आजु मेरे उर आँख बसी है मूरति श्रीशिव शंकर जी की ॥
गौर बरन मल हरन जनन को करन महान मदन द्युति फीकी ॥
आजु० ॥ मंजुल मुकुट जटा जूटन को राजत कुंडल कान फणी की ॥ आजु० ॥ भय मोचन भ्राजत त्रयलोचन जेहि फेरत रह शोच न जी की ॥ आजु० ॥ सोहत सुभग मयंक भाल त्यों मुंड माल हिय हालत नीकी ॥ आजु० ॥ जासु नंग शिर गंग बिराजत बाम अंग शोभा युवती की ॥ आजु० ॥ सुन्दर छवि अनूप 'शशिशेखर' अद्भुत हर समान हर ही की ॥ आजु० ॥ ५४ ॥

भजन।

दीजै दरश पुरारी, अब मोहिं दीजै दरश पुरारी ॥
शिर शुचि गंग सुढंग बिराजत बाम अंग बर नारी।
निज बपु नंग अनंग कोटि लखि दंग होत छुबि भारी ॥ अब० ॥
भाल मयंक बंक भल भ्राजत त्रयलोचन भय हारी।
तैसेहिं सुभग अंक युग बालक अति अनुपम छबिधारी ॥ अब० ॥
राजति बिमल विभूति शुभ्र तन जन मन मोहन कारी।
भूषण विविध भुजंग संग महँ भूत प्रेत गन झारी ॥ अब० ॥
शारद सहस शेष मिलि कीरति बर्णहिं यदपि तुम्हारी।
तदपि न सकहिं बखानि नेकहु 'शशिशेखर' बलिहारी॥अब०५५॥

भजन।

शिव से नेह लगावो, नर तुम शिव से नेह लगावो ॥

शिव से नेह किये हित होइहिं यह विश्वास बढ़ावो।
निशि दिन रटब नाम तिनही को निज मन शुकहिं पढ़ावो॥नर०॥
जोरे जन्म करोरिन के अघ बन्हि ज्यों तुलहिं जरावो।
बिनहिं प्रयास दास बनि प्रभु के पुण्य भँडार भराश्रो ॥नर०॥
काम क्रोध अरु लोभ मोह मद दुख दारिदहिं दुरावो।
बहु सुख शांति समेत शीलते उर अंबुधिहिं पुरावो ॥नर०॥
दिन प्रति दिन छिन छिन शंकर सों प्रीति पुंज सरसावो।
'शशिशेखर' निज नयन मेघते प्रेम बारि बरसावो॥ नर०॥५६॥

भजन।

अति अद्भुत गति नाथ तुम्हारी॥
पल में करहु अखिल भूमंडल के नृप वरहिं भिखारी।
जन्म जन्म को रंक शंक बिनु सब बिधि करहु सुखारी ॥अति०॥
सोखहु सिंधु सहस्र बिनहि श्रम बूँद रहै नहिं बारी।
उपजावहु मरु माँझ कोटि त्यों सर सरिता उपकारी ॥अति०॥
जो अति अधम पुंज पातक को करहु भक्ति अधिकारी।
करि जो जुगुति तपावत तन को ताहिं निंद्य व्यभिचारी ॥अति०॥
यों घटना अघटित अपने दृग मैं हुँ अनेक निहारी।
आशुतोष बड़ आश आपकी 'शशिशेखर' उरधारी ॥अति०॥५७॥

भजन।

अब न गुमान करहु कोउ ज्ञानी॥
अति बिकराल काल कलि को यह बहु भाँतिन जिय जानी।

तापर विकट सुभट कामादिक विकल किये सब प्राणी ॥अब०॥
का जप योग किए सिधि होइहि मो सन कहहु बखानी ।
बिनु उर अमल भए जिय शोचहु श्रुति संमत यह बानी ॥अब०॥
तेहिते अजहुँ विगत मद होवहि जड़ मूरख अभिमानी ।
जौ चाहत चिरकाल राखनो निज रक्षित कुल कानी ॥अब०॥
पावन पतित अपावन पालन करन महेश भवानी ।
बिनवहु तेहि विनीत 'शशिशेखर' जोरि जुगल वर पानी ॥अ०॥५८

भजन ।

चंद्रचूड़ चरण कमल चितय चित मेरे ।
अतिशय अघ राशि नाश, संचित पुण्यन प्रकाश,
होयलेत नाम जासु जन्म जन्म केरे ॥ चंद्रचूड़० ॥
जावहिं बहु दूरि भाज, विघ्न बिधायक समाज,
काम क्रोध लोभ मोह आज हैं जो घेरे ॥ चंद्रचूड़० ॥
अंतर्गत विमल ज्ञान, होय हृदय भक्ति खान,
जौ पै सह प्रीति तू प्रतीति मान लेरे ॥ चंद्रचूड़० ॥
सज्जन सतसंग पाय, संसृति मूलहिं नशाय,
जीवत जग मैं अघाय, सुन्दर सुख सेरे ॥ चंद्रचूड़ ॥
अंत मरत मुक्ति बाम, केरे कर कंज थाम,
मंजुल रमनीक धाम पावहि शिव नेरे ॥ चंद्रचूड़ ॥
सुभग शंभु सानुकूल, मेटहिं त्रयताप शूल,
छमि कै भ्रम भूल सबै 'शशिशेखर' तेरे ॥ चंद्र० ॥ ५९

भजन।

शंकर शंकर शंकर हो, मन जपहु निरंतर ॥ शंकर हो मन० ॥
सब श्रुति केर साँच यहि जानहु मूल मनोहर मंतर हो ॥ मन० ॥
छूटहिं यमकी सहजहि माहीं अतिशय भीति भयंकर हो ॥ मन० ॥
जग जीवत सुख भोगि मुक्ति पुनि पावहि मृत्यु अनंतर हो॥ मन० ॥
राखहु मूरति मंजुल हरकी 'शशिशेखर' उर अंतर हो ॥ म० ॥ ६० ॥

भजन।

जीवन धन जन के शंभु उमा ॥
परिहरि अपर आशजन जेते तिनके रहत भरोस शरण के। शं० ॥
करतल करत चारु चारिहु फल मेटत ताहूँतिप तेहि तनके॥ शं० ॥
का कहुँ देव दयाल दूसरे खोजेहु मिलिहहिं ऐसि रहन के। शं० ॥
'शशिशेखर' मोहिं करहु सदाशिव सेवक करम बचन अरु मनके
॥ शंभु० ॥ ६१ ॥

भजन।

शंकर दीन दयाल, हमारे प्रभु ॥ शंकर० ॥
जाके शीश सोहती सुरसरि, इंदु बिराजत भाल ॥ हमारे० ॥
नैन तीन वपु पीन दीन बहु आशुहि कीन निहाल ॥ हमारे० ॥
कर त्रिशूल त्रयशूल विमोचन, विविध विभूषण व्याल ॥ हमारे० ॥
राजति रम्य विभूति विशुचि वर गरल कंठ विकराल ॥ हमारे० ॥
[illegible]ग पिशाच नंग नाचत हर महाकाल के काल ॥ हमारे० ॥
[illegible] 'चंद्रशेखर' गिरिजावर मोपर होहु कृपाल ॥ हमारे० ॥ ६२ ॥

भजन !

मन की रीति है विपरीति ॥ मन० ॥
बदत वेद पुराण संतत संत त्योंहि सप्रीति।
सुनत समुझत सकल जगकी नीति और अनीति ॥ मनकी०
यद्यपि हर कीरतन कीन्हें मिटत यमकी भीति।
तदपि सहित सनेह मूरख अपर गावत गीति ॥ मनकी०
शरण शंकर के सिधारे लेहि कलि कहँ जीति।
त्यागि सो शठ लाग सेवन अन्य ही अनरीति ॥ मनकी०
अजहुँ जौ जड़ जागि शिव कहँ सुमिरु सह परतीति।
'चंद्रशेखर' आशु दुखकी रैनि जावहि बीति ॥ मनकी० ६३

भजन ।

मन मंजु निरंतर मंत्र याहि। जपु सांब सदाशिव गौरीश
जेहि सार तत्व वेदहु वदंत, निज जाहिं सर्वस सुखद सं
नहिं पावत शारद शेष अंत, यहि के अगनित गुण गनहिं ग
पुनि वर्णहि अस कहु शक्ति काहि ॥ जपु सांब० ॥
दलि जाहि तोर बहु दुख दलानि, गमनहिं गृहते अतिगति गल
खल काम क्रोध वृंदहु बिलानि, कुल कुमति कला पल में पला
तव प्रवल पुंज पातक पराहि ॥ जपु सांब ॥
भलि भाँति भाग जग मगहि तोर, प्रभु आशु कृपा की करहिं को
तोहिं देहिं सुभग सुख सिंधु बोर, अब अवशि सिखावन मान
शुचि सहित प्रेम चित माहिं चाहि ॥ जपु सांब० ॥

जग जागहिं सुकृत समूह साँच, लागहिं नहिं आवा गमन आँच,
जनि मूढ़ वचन मम जानु काँच, वनिदास शंभु संमुख तु नाँच,
'शशिशेखर' शंकर शरण जाहि॥ जपु साँव०॥ ६४॥

कौवाली।

दरसन देना प्रभु महराज भोला नाथ कहाने वाले॥
जिनके जटा में सोहैं गंग, बाएँ पारवती अरधंग,
रहते भूत प्रेत गन संग, लीला अमित दिखाने वाले॥
सुन्दर गौर मनोहर अंग, निरखे होवे दंग अनंग,
निशिदिन रहत सदाशिव नंग, डिंडिम डमरु बजाने वाले॥
ओढ़े करि केहरि की खाल, कीन्हें निज तन भूषित व्याल,
हैं वो महाकाल के काल, मुंड की माल बनाने वाले॥
भ्राजैं बाल चंद्रमा भाल, देवैं ताप तीनहूं टाल,
पल में करते दीन निहाल, भक्त भ्रम जाल नशाने वाले॥
शंकर चढ़ते बैल विशाल, होते मुदित बजाए गाल,
देहिं जो चरण शीश को डाल, तासु मरयाद बचाने वाले॥
जिनका गिरि कैलाश निवास, मो कहँ जानि आपनो दास,
करैं सो 'शशिशेखर' हिय वास, स्वजन की आश पुराने वाले।६५।

कौवाली।

जय शिवशंकर भोलानाथ दीनानाथ महेश पुरारी॥
हौ अलख निरंजन स्वामी, सब घट घट के अंतर्यामी,
भुवन नाथ बैल के गामी, महिमा अपरंपार तुम्हारी॥जय०॥

तुम हौ असुर विनाशन हारे, अंधक जालंधर गज मारे,
जबजब देव विनीत पुकारे, तबतब करि करि कृपा उबारे ॥ज०॥
ऐसे आप दीन त्राता हौ, निज भक्तन के सुख दाता हौ,
कारण बिनहिं विश्व भ्राता हौ, ऐसो वरद वेद उच्चारी ॥ज०॥
अपनो जानि कृपा यह कीजै, 'शशिशेखर' को दरसन दीजै,
इतनो यश उदार ह्वै लीजै, प्रभुजी विनती यही हमारी ॥ज०॥ ६६॥

दादरा।

मन भजु हरनाम, काहू गरब जनि भूलै ॥
हरके भजे ते प्यारे भजेते प्यारे, सधि हैं सब काम ॥ काहू० ॥
नहिं ए काऊ सुखदाता-कोऊ सुखदाता, गृह धन सुत वाम
॥ काहू० ॥ तेहिते समुझि जिय माहीं-समुझि जिय माहीं, चहु
जो अभिराम ॥ काहू० ॥ बनि तौ रहो शिवजी के रहो प्रभु जी
के, 'चन्द्रशेखर' गुलाम ॥ काहू० ॥ ६७ ॥

दादरा।

करि देवो वेड़ा पार मेरा सदा शिव शंभो ॥
तुम हौ जगत पति स्वामी, जगत पति स्वामी, सब शुभ
दातार ॥ मेरा० ॥ अघके विनाशन हारे, नशावन हारे, बहु
सुकृता गार ॥ मेरा० ॥ हम हैं पतित अति कामी, पतित अति
कामी, मति मंद हमार ॥ मेरा० ॥ हमरे आशहिय भारी, अ
प्रभु भारी 'चंद्रशेखर' तुम्हार ॥ मेरा० ॥ ६८ ॥

दादरा ।

सुमिरे नहिं राम, बीतो बयस मम सारी ॥
पाई पुण्य मम देही, शुद्ध वपु एही, देव चहैं जेही,
साधन कर धाम ॥ बीतो॰ ॥
भूले विषय रस माहीं, लोभ लपटाहीं, मोह अरु झांहीं,
सुत बित अरु बाम ॥ बीतो॰ ॥
पूजे देव द्विज नाहीं, संत जन काहीं मंद नर पाहीं,
न भये शुभ काम ॥ बीतो॰ ॥
अजहूँ चेत जिय जोई, कपट छल खोई, रटे नित सोई,
'चंद्रशेखर' सुनाम ॥ बीतो॰ ॥ ६९ ॥

दादरा ।

मोहिं भावैं भोलानाथ, शैल सुता सँग लीन्हे ॥
जिनके वदन छबि प्यारी, मदन मद हारी, सदन शुभ वारी,
शुचि सोहैं शशि माथ ॥ शैल॰ ॥
जिनके शीश पर गंगा, व्याल हैं अंगा, भूत गन संगा,
डमरू बजै हाथ ॥ शैल॰ ॥
जिनके चरण अनुरागी, अतिहिं बड़ भागी, अंत तन त्यागी,
तिनके रहैं साथ ॥ शैल॰ ॥
जिनके सुयश सुनि पाए, दीन मन भाए, शरण हम आये,
'चंद्रशेखर' अनाथ ॥ शैल॰ ॥ ७० ॥

दादरा ।

जहाँ बहै गंगधार, काशीपुरी मन भाई ॥

जहां की कुटिल गलियारी, अधिक अँधियारी, परम सुख कारी,
चले शीतल बयार ॥ काशी० ॥

जहाँ के निवासी नीके, शुद्धि शुचि ही के, भक्त शिव जी के,
करैं हर हर उचार ॥ काशी० ॥

जहाँ के कीट कृमि कारी, पुराय तम भारी, मोक्ष अधिकारी,
तिनकी बलिहार ॥ काशी० ॥

जहाँ के भूप जग ताता, दीन जन त्राता, मुक्ति के दाता,
'चंद्रशेखर' उदार ॥ काशी० ॥ ७१ ॥

पुर्बी ।

लगि गैलें अब तो मोर लगनवाँ, शंकर जी के चरणवां राम ॥
जगि गैलें भाग्य हमार वोहि दिनवां, जे दिन भैलो शरणवां राम ॥
पूरब पुराय प्रकाशित भैलें, होगैलें पाप हरनवाँ राम ॥
शीतल भैलें हमार सब गतवा, मिटि गैलें जिउ कै जरनवाँ राम ॥
सुख कै साज सजल सब ओरवाँ, भैगैलें दुःख टरनवाँ राम ॥
मोसे अधम पर केलें कृपा शिव, ना जाने कौने करनवाँ राम ॥
'शशिशेखर' हर पूरण करिहैं, जन जिय केरे परनवाँ राम ॥७२॥

बसंत ।

चाहहु सुत सुख संपति सुधार । तो भजहु उमापति अति उदार ॥
निज नंग सदा शिव अंग छार । भक्तन पट भूषण बहु प्रकार ॥

हर करत भंग विष को अहार। मेवा मृदु मोदक भक्त भार ॥
जन दीन हीन लोकोपचार। सब भाँति तिनहिं शंकर अधार ॥
विधि जासु सुगति नहिं लिखि लिलार। तेहि देत स्वगति शिव कृपाऽगार ॥
जग जियउँ गाइ गुण गन तुम्हार। माँगत 'शशिशेखर' यह हमार ॥ ७३ ॥

बसंत

शिव सुमिरहु सुभग सनेह सानि। अति आशु करहु अघ अमित हानि ॥ प्रभु दायक विमल विवेक दानि। संपति सुत सुन्दर शर्म खानि ॥ जल मलय मंजुदल बिल्व आनि ॥ पूजत प्रमुदित पद कंज प्राणि ॥ 'शशिशेखर' तिन कहँ हरहि जानि। हिय हरखि बरहि मुकुती महानि ॥७४॥

बसंत

नहिं कोउ उदार त्रिभुवन मझार। शिव सम हम देखत दृष्टि फार ॥ निज रहत दिगंबर वस्त्र हीन। दीनहिं सुरेश संपति सुदीन ॥ अति रंक अंक अज डारि जाहि। सम कीन्ह धनद शिव टारि ताहि ॥ शुचि आनि मुदित श्रीफल दलानि। पुजत सप्रेम शिव लिंग प्राणि ॥ पावत प्रमोद आनंद वृन्द। सुख पुंज लुंज दुख दुरित द्वंद ॥ अति अधम हु आवहिं शरण भाजि। शिव देहिं तासु सब सुगति साजि ॥ गुण गावहिं अखिल पुराण वेद। कोटिन जन कीन्हे विगत खेद ॥ का करहिं कठिन कलियुग

कराल। जौ रहहिं सदा शंकर कृपाल ॥ प्रभु देहु दया करि भक्ति दानि। माँगत 'शशिशेखर' जोरि पानि ॥ ७५ ॥

बसंत

ऋतुराज आज आए बसंत। चलुरी सब पूजन उमा कंत ॥
दोहा०—लावो झारी स्वर्ण की, भरि लाऊँ जल जाय।
सुफल जन्म अपनो करैं, शिव के शीश चढ़ाय ॥
फल पावहु री याको अनंत ॥ चलुरी० ॥
दोहा—मंजु मलय कुंकुम सहित, घसि लाओ री वीर ;
ललकि ललकि लेपहु ललित, मृदुल महेश शरीर ॥
यहि सार तत्व वेदहु वदंत ॥ चलुरी० ॥
दोहा—बिल्व पत्र लै सुमन शुचि, शोभित हार बनाय।
रचहु रुचिर शृंगार वर, निरखि नयन सुख पाय ॥
अति आशु अमित दुरितै दलंत ॥ चलुरी० ॥
दोहा—अबिर गुलाल हु डारि कै, शंकर जू के अंग।
धूप जारि करु आरती, सब जुरि कै इक संग ॥
तुम सो न आन कोउ पुण्य वंत ॥ चलुरी० ॥
दोहा—रुचिकर व्यंजन भाँति बहु, विधि सों भोग लगाय।
देहु इलायचि लवँग युत, पान दान हरखाय ॥
पुनि गावहु ऋतु अनुसर वसन्त ॥ चलुरी० ॥
दोहा—बाजन विविध बजाय कै, उर अनुराग बढ़ाय।
नाचहु री हिलि मिलि सबै, शिव सन्मुख अब आय ॥
तोहिं तरसि सराहहि अखिल संत ॥ चलुरी० ॥

दोहा—करहु प्रदक्षिण प्रेमते, बार बार शिर नाय ।
बिनवहु जुग कर जोरि कै, हर चरणन चित लाय ॥
सब ऋद्धि सिद्धि साधक इ मंत्र ॥ चलुरी० ॥
दोहा—पूजि 'चन्द्रशेखर' प्रभुहिं, इहि विधि सों मति धीर ।
इत सुत संपति लहहिं पुनि, तजि कै अधम शरीर ॥
शिव लोक सिधारहु सुखद अंत ॥ चलुरी० ॥७६॥

होरी

आई री सखि होरी, चलो शिव पुजन कोरी ॥ आईरी० ॥
इत उत जाय बुलाय सहेलिन, लीजै संग बटोरी ।
हिलि मिलि चलि सुरसरि करि मज्जन, अति मन मुदित वहोरी,
शिवालय को पधरो री ॥ आईरी० ॥
बैठि वरासन अर्घ्य पाद्य दै हिय बिच ध्यान धरो री ।
शीतल युत सुगंध निरमल जल शिव अभिषेक करो री,
पोछि पुनि अतर मलोरी ॥ आईरी० ॥
चंदन चर्चित लिंग करो पुनि विल्व पत्र मृदु तोरी ।
धारि शिव शोश सँवारि सुमन शुचि, रुचिर शिंगार रचोरी,
हरो सुख नयन लहोरी ॥ आईरी० ॥
अबिर गुलाल डारि शिव ऊपर धूप जारु बहुतो री ।
दीप माल लै करिय आरती, बहु दल दुरित दलोरी,
भोग साम ग्रिहिं जोरी ॥ आईरी० ॥
करि निवेद्य पुनि पान दान दै गावहु गीत सुहोरी ।
बाजन विविध बजाय सखी री सन्मुख शंभु नचोरी

धन्य जग तो सम कोरी ॥ आई री० ॥
शिव चरणन शिर नाउ लाय उर मैं अनुराग अथोरी।
इहि विधि पुनि प्रेम ते प्रभु सों, मिलव जाय एक ठोरी,
'चंद्रशेखर' हर सों री ॥ आई री ॥ ७७ ॥

होरी

खेलत हैं त्रिपुरारी आजु होरी सुखकारी ॥ खेलत० ॥
इत गण के समुदाय सुहावत, उत योगिनि मन हारीं।
मिलि दल युगल प्रेम रस साने, मारत हैं पिचकारी,
रंग भरि कै बहु बारी ॥ खेलत० ॥
लै लै मुठिन गुलाल डालते प्रीति परम उर धारी।
ललित कपोल ललकि मरदत हैं, अबिर गंध युत प्यारी,
हरख हिय मैं अति भारी ॥ खेलत हैं० ॥
बर बर बचन ब्यंग के बोलत सुरस सनेह सँवारी।
भरि भरि अंक निशङ्क लेत सब ह्वै कर मग्न महारी,
जयति शिव शंभु पुकारी ॥ खेलत हैं० ॥
निरखहिं बिशद बिमान चढ़े सुर संकुल सहित स्वनारी।
बरसि सुमन जिय तरसि-देत हैं, तन मन तिन पर वारी,
'चंद्रशेखर' बलिहारी ॥ खेलत हैं० ॥ ७८ ॥

होरी

शङ्कर की छबि लागत प्यारी ॥ शङ्कर० ॥
गौर बरन वर बदन उमावर संत स्वजन मन हारी।

नन द्युति कोटि अतन लखि लाजत, भ्राजत शीश सदारी,
बिमल जल सुरसरिता री ॥ शङ्कर० ॥
भाल बिशाल बाल शशि शोभत तानिहुँ ताप निवारी।
सूरज चंद्र अनल मय सुन्दर, त्रय लोचन भय हारी,
हलाहल कंठ भँभारी ॥ शङ्कर० ॥
कंकन कुंडल आदि बिभूषण बहु विधि ब्याल सँवारी।
माल नृमुंड हिए बिच हालत, बाम अंग सुकुमारी,
सकहि कहि को सुखमा-री ॥ शङ्कर० ॥
डिमिक डिमिक कर डमरु बजावत वृढ़ बयल असवारी।
नाचत भूत प्रेत पंघत सब, गावत गीत सुधारी,
'चंद्रशेखर' यश वारी ॥ शङ्कर० ॥७६॥

होरी

शिव से सनेह लगाए बिनाहीं ॥ शिव से० ॥
केहि विधि कटहिं कलेश तुम्हारे केहि विधि पाप पराहीं।
केहि विधि सुकृत समूह जगहिं जग, केहि विधि सुख दरशाहीं
चहुँ दिशि दुःख दिखाहीं ॥ शिव से० ॥
सुत संपति सौभाग्य कहो केहि विधि गृह माँझ सुहाहीं।
किमि अबला अनुकूल मिलहिं पुनि, प्रीति परस्पर माहीं,
कहहु केहि विधि प्रगटाहीं ॥ शिव से० ॥
काम क्रोध अरु लोभ मोह दल केहि बिधि निपट नशाहीं।
भक्ति विवेक तुम्हारे हिए महँ, केहि विधि आय समाहीं,
शांति केहि भाँति थिराहीं ॥ शिव से० ॥

निरमल होय मुकुर उर केहि विधि शंभु स्वरूप लखाहीं ।
एहि भव भ्रमण विहाइ कवन विधि, निवसव होय सदाहीं,
'चन्द्रशेखर' हर पाहीं ॥ शिव से० ॥ ८० ॥

होरी

शिव चरणन नहि राता । वादि नर वयस विताता ॥शिव०॥
भ्रमि चौरासि जीव जड़ जवहीं यहि देहहिं तू पाता ॥
जकड़ि सकल तन वाँधि भाँति भलि, करि उलटा लटकाता,
जठर के ज्वाल तपाता ॥ शिव० ॥
मल मय दुखद निवास त्रास कृमि गन कर लहि विलपाता ।
दोउ कर जोरि विनीत वार वहु, प्रभु सो विनय सुनाता,
भजन हित कौल दृढ़ाता ॥ शिव० ॥
सुनि तव विनय कृपालु ईश तोहिं वहुरि प्रवोध कराता ।
विलखत पेखि अधीर पीर बस, नीर नयन दुहुँ जाता,
कियो वाहिर जग ताता ॥ शिव० ॥
तू वहिराय विहाय लाज भय हर सुमिरन विसराता ।
पाय वित्त वनिता वालन को, तिन मह मूढ़ लुभाता,
सतत विषयादि सुहाता ॥ शिव० ॥
जेहि हित लागि विमुख भयो प्रभुसो सोइ भे जरठ घिनाता ।
तू धरि खाट पुकारत आरत, ढिग तेरे नहिं आता,
पलटि वरु तोहिं खिसिआता ॥ शिव० ॥
जस तस करि वहु तलफि कलपि कै प्राण निसरि जव जाता
फूँकि तापि सव दूर भए जन तू यक आप सिधाता,

गए पूछहिं यम बाता ॥ शिव० ॥
कहु का कीन्ह सुकृत का दुष्कृत को एहि औसर त्राता।
मूक बधिर इव सुनत न बोलत, शाशित ह्वै पछिताता,
परयो रौरव अघ व्राता ॥ शिव० ॥
'शशिशेखर' शठ पाय मनुजवपु क्यों निज कर्म नशाता।
पावन पतित अधम उद्धारन, भजु भव पद जलजाता,
मिटहिं सब संकट भ्राता ॥ शिव० ॥ ८१ ॥

होरी

जो हर की शरणागत रैहैं ॥ जो हर की० ॥
पातक अमित पुरातन सारे आपहि आप नशैं हैं।
सुकृत समूह बिनहिं श्रम तिनके, दिन प्रतिदिन अधिकै हैं,
पुण्य भाजन ते कहैं हैं ॥ जो हर की० ॥
सपनेहु ताप तीनिहूँ तिन कहँ नेकहु परसि न पै हैं।
भ्राजहिं सुखद समाज भवन महँ, 'आनदँ उर उपजै हैं,
मुदित जग दिवस बितै हैं ॥ जो हर की० ॥
निरखि निरखि ऋषि पितर अमर गन संतत तिनहिं सरै हैं
सहित सनेह सभा संतन की, आदर ते जन पै हैं,
सुयश भरि भूतल छै हैं ॥ जो हर की० ॥
आशुहिं आशुतोष तेहि नर को हरखि हृदय अपनै हैं।
ह्वै अनुकूल 'चंद्रशेखर' प्रभु आवागमन मिटै हैं,
परम पद को पहुचै हैं ॥ जो हर की० ॥ ८२ ॥

होरी

गंग तरंग तुम्हारी, सदा सुन्दर शुभ कारी ॥ गंग० ॥
तुम्हरे तरंग अंग जे बोरत तेपि पुण्य तम भारी।
पातक अमित पुरातन तिनके, तजिकै तासु दुआरी,
जाहिं नहि जानै कहाँ री ॥ गंग० ॥
तुम्हरे तरंग तीर निवसत जे जीव चराचर झारी।
ते सुकृती जन जनम जनम के, महा मोक्ष अधिकारी,
यहै बरणत श्रुति चारी ॥ गंग० ॥
तुम्हरे तरंग नीर पीवत जे तिनकी गति अति न्यारी।
करि परिहास मुक्ति पदवी को, उर संतोष सुधारी.
रहैं मन मग्न महाँ री ॥ गंग० ॥
तुम्हरे तरंग अस्थि जिन केरे काहु भाँति कोउ डारी।
होतेहु पतित बिराजि बृषभ वर, शिव स्वरूप शुचि धारी,
सो गिरि कैलाश सिधारी ॥ गंग० ॥
तुम्हरे तरंग महात्म श्रवण ते सुनहिं जे नर अरु नारी।
ते असनान केर फल पावहिं, बैठेहि भवन मँझारी,
पितृ गन हूँ तिन तारी ॥ गङ्ग० ॥
तुम्हरे तरंग नीच निंदत जे ते शूकर समता री।
पावहिं है योनि महँ जननी, महा मूढ़ अबिचारी,
होहि दुहुँ लोक दुखारी ॥ गङ्ग० ॥
तुम्हरे तरंगन के महिमा को को कहि सकत सँवारी।
जानि अखिल गुन धाम काम रिपु, करि अति प्रेम पुरारी,

'चन्द्रशेखर' शिर धारी ॥ गङ्ग० ॥ ८३ ॥

रसिया

आजु होरी है, लावो रंग घोरी, सबै ॥ आजु० ॥
देखो उतै आवति हैं उमा, सँग वृन्द सहेलिन जोरी सबै। आजु०॥ चन्द्र बदनि मृगनयनि चपल अति, गज गामिनि तन गोरी सबै ॥ आजु० ॥ सुन्दर वस्त्र विभूषण धारे, कटि केहरि वय थोरी सबै । आजु होरी है ॥ आजु० ॥ नेकु नहीं सकुचावो हिए में, देहु इन्हैं रँग बोरी सबै ॥ आजु० ॥ लै गुलाल डारो इन ऊपर, जानन पावैं कोरी सबै ॥ आजु होरी हैं ॥ आजु० ॥ आज इन्है अस खेल खेलावहु, भागि जाँय मुख मोरी सबै ॥ आजु० ॥ गावहु फाग भरे रस के वहु, जाय जाय इन खोरी सबै ॥ आजु० ॥ कहत 'चन्द्रशेखर' शंकर यों, निज सेवक गन सों री सबै ॥ आजु० ॥ ८४ ॥

रसिया

शिव के पद प्रीति लगाई नहीं ॥ शिव के पद० ॥
शिव पद प्रीति बिना मन मूरख, कौनिहुँ भाँति भलाई नहीं ॥ शिव के० ॥ यह नर देह देव दुर्लभ लहि, निज गति नेक बनाई नहीं ॥ शिव के पद० ॥ इत उत ते बर जोरि मोरि चित, सत संगति अरुझाई नहीं ॥ शिव के० ॥ 'शशिशेखर' जड़ भूलि भूरि भ्रम, [illegible] नहीं ॥ शिव के ॥ ८५ ॥

रसिया

शिव के पद प्रीति लगायो चही ॥ शिव के पद० ॥
आयो योग भाग जागन को, सो समुहाय जगायो चही ॥शिव॥ जोरे जन्म करोरिन के अघ, करि कै यत्न जरायो चही ॥ शिव के० ॥ जो अवसर फिरि कै नहिं आवै, सो किमिबादि गमायो चही ॥ शिव के० ॥ 'शशिशेखर' सोइ जानि निरंतर, हर सुमिरन मन लायो चही ॥ शिव के० ॥ ८६ ॥

फाग

आनँद बन आजु मची होरी ॥ आनँद बन ॥
इत शंकर उत पारवती माँ, रति अनंग मोहनि जोरी ॥ आनँद-बन० ॥ गन योगिनि बनि वृन्द परस्पर, सोहत हैं दूनिहुँ ओरी ॥ आनँद बन० ॥ कंचन कलश रंग केशर को, अबिर गुलाल लिए झोरी ॥ आनँद बन० ॥ भरि मारत पिचकारिन एक इक, भींगि गई सिगरी गोरी ॥ आनँद बन० ॥ गावत फाग नेह सरसावत, धावत हैं खोरिन खोरी ॥ आनँद बन० ॥ शशिशेखर' हम जाहिं सदाशिव, बारबार बलि बलि तोरी ॥ आनँद बन ॥ ८७ ॥

चौताल

शिव के संग खेलत होरी, गिरीश किशोरी ॥
जुथक जुथक सुहात इतहि गन हर संग सैन न थोरी।

शैल सुता समुदाय लिये उत, निजसखि वृन्द बटोरी॥गिरीश०॥
कंचन कलश भरे रंगन के, अबिर गुलाल बहोरी।
वासित सुखद सुगंध सलोने, दुहुँ दल झोरिन झोरी॥गिरीश०॥
एकहिं एक कपोल गोल महँ मरदत कुंकुम रोरी।
भरि मारहिं पिचकारिन तकि तकि, केशर कीच करोरी
॥ गिरीश० ॥ गावत गीत प्रीत सरसावत धावत खोरिनखोरी
पावत परम प्रमोद गोद भरि, 'शशिशेखर' बरजोरी ॥गिरीश॥
 ॥ ८८ ॥

चौताल

शिव जी मोहिं दास बनावो, दया दरसावो ॥
कामी कुटिल कुशील जानि जनि हमहिं दयालु दुरावो।
कुमति कुगति कुकरम रति वेगिहिं, नाथजु निपट नशावो ॥ द० ॥
जोरे जन्म करोरिन के अघ बन्हि ज्यों तुलहिं जरावो।
शुचि रुचि सुकृत सुबुधि करुणानिधि, अति आशुहिं उपजावो।द०।
प्रिय परिजन धन धरनि घरनि कर मोह महेश हटावो।
पद पंकज मकरंद मधुप इव, प्रीति परम सरसावो ॥ द० ॥
यदपि न हौं एहि योग तदपि हर यह अभिलाष पुरावो।
'शशिशेखर' निज मूरति सुन्दर, मम मन मंजु बसावो ॥द०॥८९॥

फाग।

शिव के कैल पुजनवाँ हो, दिन आए फगुनवाँ ॥
सब साथी समुदाय संग जुरि, सुरसरि कै असननवाँ हो ॥
दिन०॥पीताम्बर रुद्राक्ष भस्म धरि, बैठि विशुद्ध असननवां हो॥

पंचामृत नहवाय नीर पुनि, पोंछि पुनीत बसनवां हो ॥ दि०॥ चंदन अतर चढ़ाय बिल्व दल, शोभित करहु सुमनवां हो ॥ दि० ॥ धूप दीप नैवेद्य पान फल, हरहिं करौ अरपनवाँ हो ॥ दि० ॥ अबिर गुलाल डारि प्रभु ऊपर, पूरण कै अरचनवाँ हो ॥ दिन० ॥ गीत वाद्य नृत्यादिक साजहु, ह्वै मन मग्न मह्नवाँ हो ॥ दि० ॥ 'शशिशेखर' संयोग लगै अस, सो शुभ दिवस सुजनवाँ हो ॥ दिन० ॥ ९० ॥

फाग ।

हर जी से है लागी लगनवाँ हो ॥ हरजी से ॥
गौर बरन सोहत शंकर को, मोहत कोटि मदनवाँ हो ॥ हर०॥ शीश चंद आनंद कंद शिव, सुन्दर पंच बदनवाँ हो । हरजी से ॥ हर०॥ कंठ माल मुण्डन का राजै, भ्राजत तीनि नयनवाँ हो हरजी से ॥ हर० ॥ भूषण विविध भुजंग अंग महँ, संग पिशाच सयनवाँ हो । हरजी से ॥ हर० ॥ केहरि कृत्ति कसे कटि मंजुल, बूढ़ विचित्र बहनवाँ हो । हरजी से ॥ हर०॥ 'शशिशेखर' करजोरि उमावर, मांगत प्रीति पगनवां हो । हरजी से ॥ हर० ॥ ९१ ॥

फाग ।

शिव से प्रीति न जोरी, रे मनवां; भूल वड़ी यह तोरी ॥
शिव से प्रीति किये विनु नाहीं, है सुख कौनेहु ओरी । रे मनवाँ भूल० ॥ कौल कियो जो गर्भबास में, सो कस कै शठ

छोरी ॥ रे मनवाँ भूल० ॥ पाय वित्त वनिता बालन को, होय गई मति भोरी ॥ रे मनवाँ भूल० ॥ आपति आय पड़े कर्मन वस, देइ दैव कहँ खोरी ॥ रे मनवाँ भूल०॥ अजहूँ रेजड़ जागु त्यागु सब, शेष रही बय थोरी ॥ रे मनवाँ भूल० ॥ 'शशिशेखर गुणगन सागर महँ, निज कहँ देहि डबोरी ॥ रे मनवाँ भूल० ॥ ॥६२॥

फाग।

जो हरसे प्रीति लगाई, सोई सुख पाई जगत में ॥
पाप पुरान पराई तिनकै, पुण्य पुंज अधिकाई ॥ सोई सुख० ॥
दुख रहिहैं बहु दूर तिनहिं ते, सर्व दिशि आनँद छाई ॥ सोई० ॥
शत्रु समूह नशैहैं तिनके, मिलि हैं मित्र जनाई ॥ सोई० ॥
सब दिन मंगल तिनके घर में, बजि हैं नित्य बधाई ॥ सोई० ॥
काहे को खोजैं प्रमान पुरान को, मो कहँ ऐसे दिखाई ॥ सोई० ॥
"शशिशेखर' सो शंभु कृपा से, जीवन मुक्त कहाई ॥सोई०॥९३॥

फाग।

मन लागा हो राम मन लागा हो राम, शंकर जी के चरनवाँ ॥
उनहीं कै चिंतन हम करबै, उनहीं केर धियनवाँ राम ॥ शं० ॥
उनहीं कै दरसन हम करबै, उनहीं कै परसनवाँ राम ॥ शं० ॥
नउहीं कै पूजन हम करबै, उनहीं कै अरचनवां राम ॥ शं० ॥
'शशिशेखर' होवै तन मन से,उनहीं केरे शरणवाँ राम॥शं०॥९४॥

फाग ।

बौरहे बवा की बलिहारी, बौरहे बवा की बलिहारी ॥
आपतो खावैं भांग धतूरा, भक्तन को मेवा थारी ॥ बौरहे० ॥
पीवैं आप हलाहल हरखे, भक्तन को अमृत झारी ॥ बौरहे ॥
पहिरैं आप बघंबर खासा, भक्तन के हित पट सारी ॥ बौरहे० ॥
आप लपेटे नागराज हैं, भक्तन को भूषण भारी ॥ बौरहे० ॥
आप तो सोवैं शिला शैल की, भक्तन के हैं चट,सारी ॥ बौरहे० ॥
कहत 'चंद्रशेखर' ऐसे हैं धन्य धन्य श्री त्रिपुरारी ॥ बौ० ॥९५॥

फाग ।

शंकर शिव वं वं वं भोला, शंकर शिव वं वं वं भोला ॥
जग दाता देवेश बिदित तुम, अखिल विभूति भरे झोला ॥ शं० ॥
हम याचक बर द्दै क दीजियो, परे रहैं तुम्हरे टोला ॥ शं० ॥
छके रहैं निशि द्योस रंग में, छाने प्रेम भंग गोला ॥ शं० ॥
'शशिशेखर' प्रभु गुण गन गावे,मस्त रहैं अपने चोला ॥शं० ॥९६॥

घाटो ।

शिव जी से लगल लगनवाँ ॥ हो रामा ॥ चैत के महिनवां ॥
आनि गुलाव विबिध गुच्छा गुहि,
बिधि युत करवैं पुजनवाँ । कि अब हो पुजनवाँ हो रामा ॥चै०॥
धूप दीप नैवेद्य पान दै,
हियबिच धरबै धियनवां । कि अब हो धियनवाँ हो रामा ॥चै०॥

चित चिंतित चैती नित गैबै,
मिल कै चारि सुजनवां। कि अब हो। सुजनवां हो रामा॥चैं०॥
'शशिशेखर' कर जोरि शिवाशिव,
के हम परवै पयनवाँ। कि अब हो। पयनवाँ हो रामा। चै०६७॥

घाटो।

शिवशिव करु निशिदिनवाँ। कि अब निशि दिनवाँ हो रामा॥
मोरे मनवां॥ शिवशिव करि भव पार उतरिगे,
कीन्हेहु पाप महनवां। कि अब हो। महनवां हो रामा॥मोरे०॥
जप तप ध्यान आदि कछु कलि में,
कीन्हे नहिं कलि अनवां। कि अब। कलिअनवां हो रामा॥मोरे०॥
नहिं एहि वाक्य बिलास जानु अस,
भाखत वेद पुरणवां। कि अब हो। पुरणवाँ हो रामा॥मोरे०॥
'शशिशेखर' सोइ साँच सयाने,
जिनभे शंभु शरणवां। कि अब हो। शरणवां हो रामा॥मोरे०॥
॥ ६८॥

घाटो।

लागत है छबि प्यारी। कि अब। छबि प्यारी हो रामा॥ शंभु-
तुम्हारी॥ शंभु०॥ मौलि मयंक बंक भल भ्राजत,
वाम अंक बर नारी। कि अव। बर नारी हो रामा॥ शंभु०॥
नैन तीन अति पीन कलेवर,
हीन मदन द्युति भारी। कि अब। द्युति भारी हो रामा॥शंभु०॥
मुंड माल हिय डाल ब्याल तन,

कालहु के भय कारी । कि अब । भय कारी हो रामा ॥शंभु०॥
सुरसरि शीश सुहाति सदाशिव,
'शशिशेखर' बलिहारी । कि अब । बलिहारी हो रामा ॥शंभु०॥
॥ ९९ ॥

घाटो ।

लागत है छबि नीकी कि अब । छबि नीकीहो रामा ।शङ्करजीकी॥
गौर बरन मन हरन जनन को,
करन मदन द्युति फीकी, कि अब । द्युति फीकी होरामा॥शङ्कर०।
शीश गंग शोभा सुढ़ंग त्यों,
वाम अंग युवती की, कि अब । युवती की हो रामा ॥ शङ्कर०॥
भूषण व्याल ज्वाल मय लोचन,
चारुता भाल शशी की, कि अब हो । शशी को हो रामा॥शङ्कर०।
'शशिशेखर' अनुपम मूरति सो,
हर समान हर ही की, कि अब । हर ही की हो रामा ॥शङ्कर०।
॥ १०० ॥

घाटो

शिव पद नहि पहिचाने हो रामा ॥ विषय भुलाने ॥
जो नर देह दीन्ह दाया करि, तेहिसन तु न हित माने हो रामा ॥ विषय० ॥ बाल बयस खेलन में खोयो, तरुण तरुणि रस साने हो रामा ॥ विषय० ॥ आइ जरा यम घेरि लियो जब, तब जड़ मति अकुलाने हो रामा ॥ विषय० ॥ 'शशिशेखर' हर शरण भयों नहिं, जीवन बादि बिहाने हो रामा ॥ विषय० ॥१०१॥

घाटो

शिव पद प्रीति लगाओ हो रामा ॥ विषय भुलावो ॥
शिव पद प्रीति किये हित होइहिं, यह विश्वास बढ़ावो होरामा॥
जोरे जन्म करो रिन के अघ, बिनु श्रम सबहिं नशावो होरामा ॥ विषय० ॥ नर तन नीक अमर दुर्लभ लहि, सुख कर सुकृत कमावो हो रामा ॥ विषय० ॥ 'शशिशेखर' पग पोत पकरि दृढ़, भव वारिधि तरि जावो। हो रामा ॥ विषय० ॥ १०२ ॥

घाटो

दिवस न जात जनाने हो रामा ॥ बयस बिहाने ॥
शिव सुमिरन को समय मिल्यो नहिं, माया महँ अरुझाने हो रामा ॥ बयस० ॥ संपति सुत सुन्दरि सुख स्वारथ, साधत काल गँवाने हो रामा ॥ बयस० ॥ कौल कियो जो गर्भ वास में सो सब सुरति भुलाने हो रामा ॥ बयस० ॥ 'शशिशेखर' नर देह नीक लहि, नहिं हर हाँथ बिकाने हो रामा ॥बयस०॥१०३॥

घाटो

को जग मीत हमारो हो रामा ॥ जाहि पुकारो ॥
सब स्वारथ हित संग करत नर, पूत पति अरु प्यारो हो रामा ॥ जाहि० ॥ धन अरु धाम बढ़ावत कारण, खोजि कै नात निकारो हो रामा ॥ जाहि० ॥ निज करनी फल भोगत नेकहुँ, कोउ न देत सहारो हो रामा ॥ जाहि० ॥ 'शशिशेखर' अस सोचि समुझि मन, मैं हर शरण सिधारो हो रामा ॥जाहि०॥१०४॥

घाटो

शङ्कर तोहरी सुरतिया हो रामा ।। बिसरत नाहीं ।।
आवत है सुधि चरण कमल को, छिन प्रति छिन दिन रतिया हो रामा ।। बिसरत० ।। बिन देखे पद पद्म तुम्हारो, धड़कत है अति छतिया हो रामा ।। बिसरत० ।। मति जनु मारि गई बावरि ज्यों, होय रही मोरी गतिया हो रामा ॥ बिसरत० ॥ 'शशिशेखर' कबधौं अवलोकहुँ, मंजु महेश मुरतिया हो रामा ॥ बिसरत० ॥ १०५ ॥

घाटो

गंग तरंग तुम्हारी हो रामा ।। लागत प्यारी० ।।
अति अभिराम धाम सुख शोभा, काम धेनु पय वारी हो रामा ॥ लागत० ॥ निवसत निकट नहात नियम ते, होत सुजन हित कारी हो रामा ।। लागत० ॥ पीवत प्रेम सहित नित नरजे, तिनके कर फलचारी होरामा ॥ लागत० ॥ बहु गुण गेह बिलोकि नेह सों, शशिशेखर, शिरधारी होरामा ॥ लागत० ॥१०६॥

घाटो

शिव से न नेहिया लगउल होरामा ॥ जिनगी नशउल ॥
पूरब पुण्य गँवउलतूँ आपन, जागल भाग भगउल हो रामा ।। जिनगी० ।। धन सुत पाइ डूबि सुख गैल, बिनशे फिरि दुख पउल होरामा ॥ जिनगी० ॥ सपनेहु नाहि सांच सुसपौल, जनम से करमके रोउल हो रामा ॥ जिनगी० ॥ (शशिशेखर) अप ने

चित में हो, बतिया हमार तूं तउल हो रामा ॥ जिनगी० ॥१०७॥

कजली

शंकर भोला के चरणवाँ मनवाँ लागल सावन में ॥ शंकर० ॥

पातक पुंज पुरातन सारे भागल सावन में ॥ शंकर० ॥

सुकृत समूह जन्म कोटिन कै जागल सावन में ॥ शंकर० ॥

जिनके प्रभुपद प्रीति नहीं ते पागल सावन में ॥ शंकर ॥

'शशिशेखर' वरदेत शिवा शिव माँगल सावन में ॥ शंकर० ॥

१०८ ॥

कजली

दानी कौन तुम्हारे सानी भोला पती भवानी के ॥ दानी० ॥

रंक अंक बिधि लिखे किए तेहि, धनपति सानी के ॥ दानी० ॥

सुर दुर्लभ पद देत दया करि नरक निसानी के ॥ दानी० ॥

विमल विवेक तुम्हारि कृपाते, होत अज्ञानी के ॥ दानी० ॥

केवल ले दल बिल्व एकहू पूजत प्राणी के ॥ दानी० ॥

'शशिशेखर' करिदेत ताहि बर, मुक्ति महानी के ॥ दानी० ॥

॥१०९॥

कजली

करो अब भोलानाथ सनाथ हाथ इस अनाथ का धरके ॥करो०॥

जनम जनम के जोरे पातक, पुंजन को हरके ॥ करो० ॥

काम क्रोध अरु लोभ मोह मद, को मरदन करके ॥ करो० ॥

अन पावनि निज भक्ति उमापति, उर अंतर भर के ॥ करो० ॥

आशुहिं आय बसो शिव शंकर, हिय 'शशिशेखर' के ॥ करो०॥
॥ ११० ॥

कजली

भोला कब देब दरसन वाँ मनवाँ लागल बाय हमार ॥भोला०॥
चितवत चित्त चकोर कबहिं क, हो मुख चंद तोहार॥भोला०॥
सुरसरि शीश फनीश विभूषण, सब अंग अंगन धार ॥भोला०॥
भाल मयंक ज्वाल मय लोचन, काम कियो जेहि छार॥भोला०॥
तैसेहि सुभग अंक युग बालक, सोहत हैं सुकुमार ॥ भोला० ॥
बाम विभाग शैल तनया छबि, छावत अमित अपार ॥भोला०॥
शोभा मंजु विलोकि सहित रति, लाजत हैं मन मार ॥ भोला०॥
'शशिशेखर' मन मन्दिर मोरे, करिय शंभु विहार॥भोला०।१११।

कजली

मोरी ओर कृपा कै कोर तनिक अब फेर हो भोला ॥
कब कै दीन दयाल दीन जन, दुख आपन रोला ॥ मोरी० ॥
कैले बा-ई काम कृपानिधि, अति बेचैन चोला ॥ मोरी० ॥
तैसेहि कोप कठिन के ज्वाला, देह दाह होला ॥ मोरी० ॥
लालच लपट लोभ करि लागल, पड़ल हिय फोला ॥ मोरी० ॥
मारत भितर मार मोहवा मुँह, जात नहीं बोला ॥ मोरी० ॥
मद कै निपट निशान लगे, मन गिरल होय गोला ॥ मोरी० ॥
'शशिशेखर' पड़ि गयल मोरे तन, मत्सर है ढोला॥मोरी॥११२॥

कजली

निरंतर जपो शिवशिव नाम, धाम धन आवै कौने काम ॥

॥ निरंतर० ॥ बालकपन तौ बृथहि बितौल, खेलि कूदि कै झाम ॥ निरंतर० ॥ भैल जबहिं जवान मस्त तू, नखशिख सरसल काम ॥ निरंतर० ॥ तौने मद बौरा य बौरह्यु, कैल ऐश आराम ॥ निरंतर० ॥ झटपट आइ बुढ़ाई पहुँचल, सबतन सिकुड़ल चाम ॥ निरंतर० ॥ आँख देखात सुनात न काने, भैल निपट निकाम ॥ निरंतर० ॥ तब बुढ़ऊ बाबा बनि बैठ, मुँह नहिं निकसत राम ॥ निरंतर० ॥ पुण्य कै कुछ परवाह न कैल, कैल पाप तमाम ॥ निरंतर० ॥ जब जम द्वार पुकार भयल तब, भयल विधाता बाम ॥ निरंतर० ॥ कबकै सुधरि जात 'शशिशेखर' हर पद लेत थाम ॥ निरंतर० ॥ ११३ ॥

कजली

तोरे ऊपर जियरा लोभान बाय हरजी ॥ तोरे० ॥

मुरती तोहार मनोहर शङ्कर, मोरे हिए हदकै समान बाय हरजी ॥ तोरे० ॥ देवता अनेकन बसलन देव लोकवाँ, मोरे लेखे सब सून सान बाय हरजी ॥ तोरे० ॥ तोहके जो देखली नयन भरि भोला, तोहई में सकल जहान बाय हरजी ॥ तोरे० ॥ अब तो बियोगवा तोहार शिव मोके, सहवै हो दुसह महान बाय हरजी ॥ तोरे० ॥ जेदिन देव दरस ओही दिनवाँ, मोरे बदे बिपति बिहान बाय हरजी ॥ तोरे० ॥ आशै अधार जियत बाई तोहरे, पग पर टँगल परान बाय हरजी ॥ तोरे० ॥ 'शशिशेखर कब करब कृपा तूं, एकर नाहीं कुछहु ठिकान बाय हरजी ॥ ११४ ॥

कजली

धनि धनि त्रिभुवन नाथ त्रिलोचन भव भय मोचन हारे ना ॥
जिनके शीश फनीश मुकुट भल, अति छवि वारे ना ॥ धनि० ॥
तैसेहि तीनि नयन करुणायुत, लागत प्यारे ना ॥ धनि० ॥
सुन्दर बाल मयंक भाल महँ, सुख मय धारे ना ॥ धनि० ॥
अंग विभूति संग भूतादिक, बहु भय कारे ना ॥ धनि० ॥
'शशिशेखर' शिव सांब सदा उर, बसहु हमारे ना ॥ धनि० ॥ ११५ ॥

कजली

झूला पड़ा मंजु बट डारी झूलैं पारबती शिव संग ॥
हर गण झूमि झुलावत भावत, गावत गीति सुढंग ॥ झूला० ॥
पाट पटंबर पारबती के, बाघंबर हर अंग ॥ झूला० ॥
मणिमय भूषण सोह शिवाके शिव के विविध भुजंग ॥ झूला० ॥
शोभा सिंधु बिलोकि जुगल छबि, उर सकुचात अनंग ॥ झूला० ॥
'शशिशेखर' प्रभु चरित सुनत जिय, बाढ़त अमित उमंग
॥ झूला० ॥ ११६ ॥

कजली

शङ्कर जी के शीश सोहैं गङ्गा, अरे साँवलिया ॥
गोर गोर बदन बिलोकत शिवकै, मोहत अमित अनंगा ॥ अरे० ॥
मुंड कै माल भाल शशि शोभत, भूषण बिबिध भुजंगा ॥ अरे० ॥
गिरि कैलाश निवास करैं हर, घोंटि पियैं नित भंगा ॥ अरे० ॥
बैल चढ़े बाबा डमरू बजावैं, भूत प्रेत लिए संगा ॥ अरे० ॥

असन बसन भोला देय त्रिभुवन कें, आप रहैं प्रभु नंगा॥अरे०॥
'शशिशेखर' उर बसहु हमारे, पारबती अरधंगा॥अरे०॥११७॥

कजली

शिव शिव करु निशिदिनवां, अरे सावनवां ॥
शिव शिव करि भव पार उतरिगे, कीन्हेहु पाप महनवाँ ।अरे०।
जप तप ध्यान आदि कछु कलिमें, कीन्हे नहिं कलिमनवाँ ।अरे०॥
नहिं एहि वाक्य बिलास जानुअस, भाखत वेद पुरणवाँ ।अरे०॥
'शशिशेखर' सोइ साँच सयाने, जिनमे शंभु शरणवाँ ॥अरे० ॥
॥ ११८ ॥

कजली

चलो अब शिव पूजन को यार। आज है सावन का सोम्वार ॥
दोहा–सब साथी मिलिकै प्रथम, गमनहु गङ्गा तीर ।
मज्जहु अति मन मुदित ह्वै. बिमल देव सरि नीर ॥
वहुरि बर पट पीतांबर धार ॥ आज है० ॥
दोहा–सुभग शिवालय शंभु के, सहित सनेह सिधारि ।
बैठि बरासन प्रीति ते, पूजहु पुनि त्रिपुरारि ॥
प्रथम तिथि बार नक्षत्र उचार ॥ आज है० ॥
दोहा–शीतल शुचि सुर सरि सलिल, शिव के शीश चढ़ाय ।
पोंछि प्रभुहिं पुनि प्रेम ते, अतर सुगंध लगाय ॥
हृदय उमगाय अनन्द अपार ॥ आज है० ॥
दोहा–चन्दन चर्चित लिंग करि, श्रीफल दल मृदुतोरि ।
मुदित चढ़ावहु गंधयुत, सुमन बहोरि बहोरि ॥

जारि कै धूप आरती बार ॥ आज है० ॥

दोहा-रुचिकर व्यंजन भाँति बहु, दधि पय पायस युक्त।
करहु निवेदित पान पुनि, लै प्रसाद प्रभु भुक्त॥
करो गुण गान चारु श्रुति सार ॥ आज है० ॥

दोहा-पुनि नाचहु मन मगन ह्वै, 'शशिशेखर' हर पास।
बहु बंदन करु अंत महँ, इमि पूजिय भरि मास ॥
बिनहिं श्रम लहहु मंजु फल चार ॥ आज है० ॥ ११६॥

कजली

शिव के जटा में गंग धार बाय। अजब बहार बाय ना। गौर बरनकी को छबि बरनै, लाग ललित तन छार बाय ॥ अजब० ॥ पंच बदन शुभ सदन विलोकत, होत लजित मन मार बाय। अजब० ॥ तीनि नयन सुख अयन मयन रिपु, भावत भल भुज चार बाय। अजब० ॥ प्रति अंग अंग भुअंग विभूषण, मुण्डन कर हियहार बाय। अजब ॥ भाल मयंक अंकागिरि तनया, शोभा अमित अपार बाय। अजब० ॥ डिमिक डिमिक डिम डमरू बजावत, वृढ़ बयल असवार बाय। अजब०॥ नाचत नंग संग शङ्कर के, भूतन कै भरमार बाय। अजब० ॥ 'शशिशेखर' हर चरण कमल में, लागल जियरा हमार बाय। अजब ॥ १२० ॥

कज़ली

जै जै गिरिवर राज कुमारी पति प्रणतारति हारी ना।
भाल चन्द आनन्द कन्द दुख द्वंद निवारी ना ॥ जै जै० ॥

तीनि नैन रिपु मैन दैन शुभ, संपति सारी ना ॥ जै जै० ॥
शीश गङ्ग भूषण भुजङ्ग, सब, अंग सँवारी ना ॥ जै जै० ॥
शूल पाणि त्रयशूल हानि भव मूल उखारी ना ॥ जै जै० ॥
'शशिशेखर' बहुबार नाथ बलि, जाउँ तिहारी ना ॥जैजै॥१२१॥

कजली

तोहरे चरणवाँ बाबा लागल बाटै मनवाँ रामा,
हरि हरि, कब मोके देब दरसनवाँ रे हरी ॥
गोर हो बरनवाँ करै मनको हरनवाँ रामा,
हरि हरि, मेटै जन जिय कै जरन वाँ रे हरी ॥
शुभ कै सदनवाँ सोहै पाँच हो बदन वाँ रामा,
हरि हरि, जेहि देखि मोहला मदन वाँ रे हरी ॥
तीसरे नयन वाँ जारथो मूरख मयनवाँ रामा,
हरि हरि, देल भोला लोक के चयन वाँ रे हरी ॥
दुख कै टरन वाँ जानि राउर परन वाँ रामा,
हरि हरि, 'शशिशेखर' आयों मैं शरण वाँ रे हरी ॥ १२२ ॥

कजली

कैसे विमल तरंग बिराजत हैं बहु धन्य तुम्हारे गंग ॥
हरि पद पद्म प्रगटि पावन जल, निवसे शिवके संग ॥ कैसे० ॥
भागीरथ तप साधि भूमितल, आनि कियो दुख भंग ॥ कैसे० ॥
पापी जनके तारन कारन, जम सों करने जंग ॥ कैसे० ॥
परसत पुनि पीवत मज्जन नित, निरमल होवे अंग ॥ कैसे० ॥

बहु मंडन परित्याग महेश्वर, निस्पृह रहने तंग ॥ कैसे० ॥
शशिशेखर, तुम्हरे गुण छकि शिर, धारत सहित उमंग ॥ कैसे० ॥ १२३ ॥

कजली

भजो मन सांब सदाशिव शंकर, रघुपति राघो राजाराम ॥
शीश जटा अरु क्रीट विराजत, गौर अंग तन श्याम ॥ भजो० ॥
भालत्रिपुण्ड तिलक शुचि सोहत, लखि लजात है काम ॥भजो०॥
तीनि नयन, कमलाक्ष, सर्पधर, मणि मुक्ता बहु दाम ॥ भजो० ॥
नीलकंठ कौस्तुभ कर कंकण, नागाधिप अभिराम ॥ भजो० ॥
अशरण शरण प्रणत जनपालक, दोउ दयालुता धाम ॥ भजो० ॥
चारु 'चंद्रशेखर' हरगौरी, सुंदर सीताराम ॥ भजो० ॥१२४॥

लावनी श्री त्रिलोचनेश्वर जी की।

श्री त्रिलोचनेश्वर के दरसन नित्य प्रीति सह जो करते ॥
करि कै कृपाकटाक्ष सदाशिव, उनके क्लेशनको हरते ॥
पृथिवी तलमैं जितने हैं शिवलिंग अखिल शिरताजे हैं।
जनके पालन हार महा प्रभु कलि मैं आप विराजे हैं ॥
सुरसरि तीर सुदृढ़ मंदिर मैं सुंदर सुखद सुभ्राजे हैं।
तीनिलोक चौदहो भुवन मैं इनके गुण गन गाजे हैं ॥
पुण्यवान वोही हैं जगमें इनके पायन जो परते ॥ करिकै० ॥
इनके चरणन के सेवक के गृहते अघगन भागे हैं।
जन्म जन्म के सुकृत पुंज इक संग आय जुरि जागे हैं ॥

धन्य भाग तिनके हैं जिनके पद सरोज लौ लागे हैं।
हैं जे विमुख चरण सेवा से वे ही परम अभागे हैं॥
सोई अधम उभय लोकन मैं तीनिहु तापन सों जरते॥करिकै०॥
यद्यपि अतिहिं दयालु हमारे श्रीत्रिलोचनेश्वर स्वामी।
तद्यपि तिनहिं अवशि दुर्लभ हैं जो संतत दुष्पथ गामी।
सेवा सुलभ उन्हीं को इनकी जो सज्जन हैं निष्कामी।
संशय विविध त्यागि निज उरते बैठे चरण कमल थामी।
उनके हिय मैं हरषि सदा हर भक्ति भली विधि सों भरते॥करिकै०॥
इनकी महिमा संत निरंतर प्रेम सहित नित गाते हैं।
इनहीं को जगदीश वेद कहि परब्रह्म बतलाते हैं।
गंगाजल दल बिल्व एकहू जो नर नित्य चढ़ाते हैं।
उनको मुक्ति देत हू मनमें शंभु बहुत सकुचाते हैं।
जिनकी प्रभुसे लगन लगी है द्वारन ते नहिं वो टरते॥करि०॥
नहिं विज्ञान योग की चरचा करना भूलि कभी प्यारे।
प्रभु पद छाड़ि और नहिं हिय मैं धरना भूलि कभी प्यारे।
शंकर के शरणागत से नहिं टरना भूलि कभी प्यारे।
होकर अभय नहीं पापों से डरना भूलि कभी प्यारे।
आप स्वयं यम दूतन के सह रहते हैं उनसों डरते॥करिकै०॥
काम क्रोध अरु लोभ मोह दल दर्प दरन हारे हैं ए।
दुख दारिद्र शोक सब विधि के वेगि हरन हारे हैं ए।
सुत संपति सौभाग्य भक्त के भौन भरन हारे हैं ए।
अगमसिंधु संसार पार बिनु श्रमहिं करन हारे हैं ए।

'शशिशेखर' बहुबार ईश के पद मैं शीशन को धरते ॥करि०॥१२५॥

लावनी

कर मेहर दास की आश पुराने वाले ॥
दरसन दे दीनानाथ कहाने वाले ॥
गिरि रजत शृङ्ग की अजब छटा छहराती।
तेहि शृङ्ग वृक्ष वट वृषभध्वजा फहराती।
ध्वनि घनन घनन घन घंटहु की घहराती।
त्रैविधि समीर तहँ चले गुंज गहराती।
बैठे अखंड शिव ध्यान लगाने वाले ॥दरसन०॥
दर[1] गौर अंग वर गंग शीश धारे हैं।
लोचन विशाल भल भाल चंद्र वारे हैं।
गर मुंड माल भूषण सुब्याल कारे हैं।
द्युति दिव्य देखि कंदर्प दर्प हारे हैं।
तन सतत शंभु सित भस्म रमाने वाले ॥दरसन०॥
जो जहर कंठ मणि नील न तेहि लेखा है।
यज्ञोपवीत शुभ कंध मृदुल बेखा है।
नाभी गँभीर अरु उदर तीन रेखा है।
कहि सो न सके जो निज नैनन देखा है।
कटि मैं फणि किंकिणि मंजु सुहाने वाले ॥दरसन०॥
वय अष्ट वरस शुचि सरल देव हैं नंगा।
जेहि के अगनित वेताल भूत गन संगा।
करता जो हरदम ही अहार बिष भंगा।

[1] शंख

यों ढंग कुढंगे लागे तदपि सुढंगा।
वो आत्मानन्द परिसीम दिखाने वाले ॥दरसन०॥
तूं आशुतोष निर्दोष है औढर दानी।
सुर और दूसरा कौन तिहारे सानी।
तुझको ब्रह्मादिक ने सब ही सनमानी।
जो तेरी तुलना करें सो हैं अज्ञानी।
कर डिमिक डिमिक डिम डमरु बजाने वाले ॥दरसन०॥
तू करता भरता फेर सकल विनशाता।
किंचित कबहीं तिन में नहिं तू श्रम पाता।
यह महिमा तेरी कोई नहीं लख पाता।
आश्चर्य डूबि मैं शतशः शीश नवाता।
'शशिशेखर' जन दुख द्वंद मिटाने वाले ॥दरसन०॥१२६॥

लावनी

मत उभय लोक में फिक्कर करो स्वगती का॥
तुम निर्भय चिंतन करो सदा शिवजी का॥
शिवचिंतन की कहँ लागि वड़ाई करें।
किंचितहि कहे मुनि व्यास भरे बहु खरें।
मुखसे निकसतहि, 'शि' कार पाप सब जरें।
कहते 'व' कार के आय सुकृत दल भरें।
शिव सुमिरक है स्वयमेव रूप मुकती का ॥तुम०॥
सुंदर सुमिरन व्यापार प्रीति जब जागे।
संपति घट तुरतहि मिलहि बिनहिं श्रम लागे।

पुनि काम क्रोध अरुलोभ सैन सह भागे ।
ममता बंधन जनु होंय सूत के धागे ।
मद मत्सर के को करै कथन कुगती का ॥तुम०॥
शिव नाम बीज जब पड़े क्षेत्र हृद्दि अंतर ।
सिंचित प्रतीति वर बारि सों होय निरंतर ।
उपजै नूतन तरु भक्ति महान शुभंतर ।
फल फले बहुरि विज्ञान त्यौं तासु अनंतर ।
सा तनहिं ब्रह्ममय होय ऐसे सुयती का ॥तुम०॥
नहिं कलि में आन उपाय किए सिधि होवै ।
साधन अनेक करि कौन वृथा श्रम खोवै ।
हर हर हरदम करि अंतर मलको धोवै ।
हरके आश्रित ह्वै रहै सदा सुख सोवै ।
'शशिशेखर' यह सिद्धांत संत श्रुति ही का ॥तुम०॥ १२७॥

लावनी

नहिं हुआ होश इतनी भी हैरानी पर ॥
लानत है जड़ इस तेरी नादानी पर ॥
भ्रमते चौरासी हुए कल्प जितने हैं ।
तेरे शरीर में रोम नहीं तितने हैं ।
यह कहे कौन अबहीं भ्रमने कितने हैं ।
मालूम नहीं क्या क्या तुझ पर बितने हैं ।
बेखबर फूलता अपनी परधानी पर ॥लानत है०॥
बहु कल्प भटकते तुझे बीत जाने पर ।

हालत को तेरी देख तरस खाने पर।
प्रभु के चित में कुछ दया भाव आने पर।
पाई ए देह दिक्कत कितनी पाने पर।
पा उसे गौर नहिं किया लाभ हानी पर ॥लानत है०॥
सब भूल गया लहि कै बनिता बालन को।
जो आप हैं निशिद्योस चित्त चालन को।
तू फिरे बावला उनके ही पालन को।
हा हो-न जाय कोइ रोग मेरे लालन को।
इस कद्र तिहारी तबियत उलझानी पर ॥लानत है०॥
कोइ लगे पुकारन बाप कहे कोइ कक्का।
तू भूल भुलैया फँसा हुआ भोचक्का।
करलिया भरोसा मूढ़ उन्हीं का पक्का।
जो देते आखिरकार हमेशः धक्का।
है मुझे शोक मति तेरी बौरानी पर ॥लानत है०॥
जब हो गए माला माल पेंठ के तनके।
मूछें मरोरते बैठे हैं बन ठन के।
कुछ देने की आवत बारी शिर ठनके।
गाढ़े नहिं आए काज कभूँ दीनन के।
अफसोस हरकतें तेरी शैतानी पर ॥ लानत है०॥
नहिं कोई आपसा भला कौन है बढ़ के।
मैं चलता हय गज आदि सवारी चढ़के।
आप निश्चित वह काल जाय जिव कढ़के।

यमदूत खबर लें खूब उन्हें गढ़ गढ़ के।
शतशः धिक है तेरे से अभिमानी पर ॥लानत है०॥
नहिं सुर गुरु ब्राह्मण की सेवा में रहते।
अनप्राप्त विरति चित से विषयादिक चहते।
त्यों शीत उष्ण को कष्ट नेक नहिं सहते।
मैं स्वयं ब्रह्म हूँ यों हिं निरंतर कहते।
छिः ऐसे मौखिक शुष्क ब्रह्म ज्ञानी पर ॥लानत है०॥
मैं हूँ 'शशिशेखर' नीच निपट खल कामी।
पर निंदक पर धन पुष्ट पर स्त्री गामी।
करि तुम सन बहु बिस्तार कहौं का स्वामी।
तुम हौ विभु सब घट घट के अंतर्यामी।
है मेरा फैसला तेरी मिहरबानी पर ॥लानत है०॥१२८॥

लावनी

बिन भजन किए जो वक्त यार खोवोगे।
कर लो यक़ीन मुँह फार फार रोवोगे॥
यह धवल धाम आराम काम आवेना।
धन धरनि घरनि तन तनय साथ जावेना।
वह गजब मुसीबत पड़े कोई भावेना।
करि जतन बचो यमदूत पकरि पावेना।
जागते जगत में रहो अगर सोवोगे॥करलो०॥
इस स्वप्न सृष्टि को सत्य समझ भूलो मत।

मिथ्या माया जंजाल मध्य भूलो मत।
कोई बिधि कौनेहु गर्ब कभी फूलो मत।
सहि शूल रहो अनकूल अन्य शूलो मत।
तजि पुण्य भूलि अघ पुंज शीश ढोवोगे ॥करलो०॥
जो सतसंगति को पाय चित्त चेते हैं।
करि प्रेम सदा सो शंकर पद सेते हैं।
ह्वै ज़बरदस्त यम के मुँह पग देते हैं।
वे खटक पटक कर पाप मुक्ति लेते हैं।
हर सुमिरि नहीं जो अंतर मल धोवोगे ॥करलो०॥
है सुगम यही सिद्धांत हृदय में धरना।
यन पड़े तो क्षण भर शिव शिव शिव शिव करना।
यह हिय में करो प्रतीति पाप का जरना।
होवेगो इतने ही में कभी मत डरना।
जो नहीं 'चंद्रशेखर' के शरण होवोगे ॥ करलो०॥१२६॥

लावनी

कोई यज्ञ युक्त व्रत दान किया करते हैं।
हम हर दम हर गुण गान किया करते हैं॥
कोइ शम साधना लगाय करें मन वस में।
कोइ दम कर इन्द्रिय दमन करें सब कस में॥
कोई प्राणायाम के डुबे हुए हैं रस में।
कोइ प्रत्याहार विचार बिमल बहु यश में॥
कोइ जप कोइ तप कोइ ध्यान किया करते हैं ।हम०॥

कोइ बद्रिनाथ जगदीश कोई जाते हैं ॥
कोइ रामेश्वर रणछोड़ कोई धाते हैं ।
कोई मथुरा कोइ काशी मन लाते हैं ॥
कोइ चित्रकूट में ही प्रमोद पाते हैं ।
कोई पुष्कर प्रस्थान किया करते हैं ॥ हम० ॥
कोइ गंगोत्तरि जमुनोत्तरि कोई जावे ।
कोइ कल्प बास करि प्राग अमित फल पावे ॥
कोइ गोदावरि गंगा सागर कोइ धावे ।
गोमती गंडकी कोई नर्मदा न्हावे ॥
कोइ नियमित सुरसरि स्नान किया करते हैं ॥ हम ॥
कोइ कर्मकांड कर अंतर मल को धोवे ।
कोइ योग युक्ति सों ज्योति निरंतर जोवे ।
कोइ संपादन कर ज्ञान ब्रह्म सम होवे ॥
कोइ भक्ति भरोसे भक्त सदा सुख सोवे ।
'शशिशेखर' सब रस पान किया करते हैं ॥ हम० ॥ १३० ॥

लावनी

पुण्य प्रकाशी अघ तम नाशी धन्य धन्य श्री काशी हैं ॥
आनँद राशी मुक्ति उपासी आनँद बन के वासी हैं ॥
धवल धार आधार विश्वकी गंग धार लहराय रही ।
निज जन पाप पहार भार को कर कर छार बहाय रही ।
सकृत बार दृग चार किए ते सुकृत अपार बढ़ाय रही ।
नर्क द्वार दै कै किवार यम सैन पुकार मचाय रही ।

बंद हुआ व्यापार तासु पुर मची महान उदासी है ॥ आनँद०॥

गृह गृह मंजुशिवालय सोहत मोहत जो मन को मेरे।
भुक्ति मुक्ति बाटन को मानहु सदावर्त के हैं डेरे॥
यांचत फिरत सुजन याचक बहु पावत नहिं कतहूं फेरे।
जीवनमुक्ति लहे से विचरत जहँ तहँ काल कर्म प्रेरे॥
हर्ष नहीं विस्मय उनको कुछ नहिं वो कछु अभिलाषी हैं ॥ आ०॥

तृण सम तीनि त्रिलोक गिने वो ज्ञान गली बिच फिरते हैं।
भवसागर अति अगम ताहि महँ सरसिज सम वो तिरते हैं॥
हरकी मेहर सदा उनपै नहिं मोह पंक वो गिरते हैं।
सानुकूल संतत शंकर यों समय सुहावन सिरते हैं॥
सगुण उपासक हैं वो फिरभी निर्गुण ब्रह्म बिलासी हैं ॥ आनंद॥

अन्नपूरणा अरुब अखिल भुवनेश्वरि जन भंडार भरें।
ढुंढिराज को कृपा कोर से कठिन कठिन हू काज सरें॥
वीरेश्वर बाँकी झाँकी दे जीवन को कृत कृत्य करें।
मणि कनिका कैवल्य देति कैसहु पापी तेहि तीर मरें॥
"शशिशेखर" रक्षक मेरे प्रभु विश्वनाथ अविनाशी हैं ॥ आ०॥ १३९

छप्पय

गौर अंग अरधंग गौरि शिर गंग संग सुत।
दंग होत निरखत सुढंग छबि रति अनंग युत॥
इंदुभाल तन व्याल माल गर मुंड बिराजत।
लोचन ज्वाल कराल खाल करि केहरि छाजत॥

मदन कदन वर बदन हर, भवन भूरि गुण धर्म धुर
पदन बंदि विनवहुँ मुदित करहु सदन जन 'शंभु' उर ॥१३२॥

छप्पय

गौर वरन वर वरनि सकहिं नहिं कोटि शारदौ ।
अवलोकत मन मुख्यो मदन भे चकित नारदौ ॥
युगल नयन अरु बंक भृकुटि नासिका अमोलै ।
कोमल अतिहि कपोल कमल सदृश को तोलै ॥
अधर दशन तन रम्यता, किमि कहि सकत सो कूर कवि ।
'शशिशेखर' हर ब्याह की, मो मन बसी अनूप छवि ॥ १३३ ॥

रोला छंद

गौर वदन शिर मुकुट श्रवण कुंडल झलकावत ।
कंठ मंजु मणि माल निरखि सब जन मन भावत ॥
विविध विभूषण बाहु धरे हियको हरषावत ।
बसन विचित्र बनाव जोति रवि शशिहिं लजावत ॥
बाजत दुंदुभि आदि मधुर सुर किन्नर गावत ।
धावत सुनि पुर लोग बसह चढ़ि दूलह आवत ॥
नाचत कूदत भूत गण लखत उमंग उछाह की ।
'शशिशेखर' को कहि सकै, शोभा शंभु विवाह की ॥ १३४ ॥

छप्पय

जय जय जय जय जयति शंभु पशुपति मृड शंकर ।
जय भूतेश गिरीश ईश शुचि शीश गंगधर ॥

व्योम केश शितिकंठ भीम भव भर्ग उग्र हर ।
जै त्र्यंबक त्रिपुरारि मौलि शोभित सुइंदु वर ॥
जयति जटिल जय जयति जय, नीलकंठ श्रीकंठ शिव ।
तव पद पंकज भृंग इव, 'शशिशेखर' मकरंद पिव ॥ १३५ ॥

कवित्त

राजैं रमनीय रत्न रचित सिंहासन पै, दंपति सुदर्प दमनीय छवि छाजैं हैं । छाजैं वहु भूषण विभूषित अखिल अंग, सुभग दुकूल हेम रंग तन भ्राजैं हैं ॥ भ्राजैं भल भाल त्रयलोचन ललित लाल, विधुकर बाल उर माल मणि साजै हैं । साजैं चहुँ ओर सुर सुंदरी व्यजन वायु, वीचं वक्रतुंड वर बदन बिराजैंहैं ॥ १३६ ॥

कवित्त

ज्ञान के निधान औ स्वरुप जाको है अनूप, सिद्धि और रिद्धि रहीं चमर डुलाई जो ॥ ब्रह्मा विष्णु शेष औ सुरेश सदा ध्यान करैं, गिरिजा सुवन एक रदन सुखदाई जो ॥ जाहिर जहान मध्य प्रबल प्रताप आप, पूजन किए ते देत बुद्धि को महाई जो ॥ चाहौं वर याहि नाथ माँगत पसारि हाँथ, 'मनिराम शुक्ल' तेरो सेवक कहाई जो ॥ १६१ ॥

कवित्त

गौरि अरधंग संग सुवन गजानन जू, शोभित जटान मध्य गंग लहरो रहै ॥ सुंदर विशाल भाल जाल गर मुंडन के, तापै

लपटाने अंग व्याल जहरी रहै ॥ धारे करि खाल औ बघंबर हू देत छवि 'शंभु' त्यों जमाए रंग भंग गहरी रहै ॥ ह्वै कै वृषारूढ़ चंद्रचूड़ जू तिहारी यह, मूर्ति गूढ़ मेरे उरं माँझ ठहरी रहै ॥ १३८ ॥

कवित्त

अति अभिराम बाम सोहत सुबाम तनु, लखि जेहि काम कोटि सुखमा नसी रहै ॥ बाल बिधु भाल वपु बिपुल सुव्याल जाल, कटि बिकराल खाल केहरि कसी रहै ॥ 'शंभु' हिय हाल त्यों बिशाल नर मुंड माल, ललित ललाट लाल लोचन लसी रहै ॥ मंजुल महेश मृदु मूरत मनोरम सी, मुदित हमारे मन मंदिर वसी रहै ॥ १३९ ॥

कवित्त

प्रथम पिनाकी पुनि दूसरे प्रहर माहिं, शंभु नाम लैकै निज पातक दहा तू कर ॥ तीजे त्रिभुवन सृष्टि पालन हरैया ताहि, चौथे सचराचर में एक सो चहा तू कर ॥ पाँचे पंचमुख षट षट मुख पुत्र जाके, सातें सप्त द्वीप में प्रतीति सों लहा तू कर ॥ याही बिधि आठहू प्रहर तू न-भूलै हर, साँब शिव सांब शिव सांब ही कहा तू कर ॥ १४० ॥

कवित्त

तेरे हित की है श्रुति संतहू कही है, नित प्रेम सों प्रसन्न प्रभु पद को गहा तू कर ॥ धारे शिर गंग औ रमाए भस्म अंग

सदा, छाये रंग भंग यहि ध्यान मैं रहा तू कर ॥ रात औ प्रभात खात आवत हू जात मन, रहहि जहाँहीं 'शंभु' रटनि तहां तू कर ॥ याही विधि आठहू प्रहर तून भूलै हर, सांब शिव सांब शिव साँबही कहा तू कर ॥ १४१ ॥

कवित्त

तेरी सौंह दूजी कछु भावना न भावै मोहिं, तोहिं उरधारि शिर सुंदर जटा करूं ॥ सेवक कहाऊँ तव तेरोइ सुयश गाऊँ, 'शंभु' त्यों प्रफुल्लित ह्वै नैनन घटा करूं ॥ न्हाऊं नित गंग औ रमाऊँ भस्म अंग सदा दोऊ कर जोरि तव संमुख डटा करूं । दास बनि तेरो जनि औरन को आश करूं, बास करूं काशी अविनाशी को रटा करूं ॥ १४२ ॥

कवित्त

प्रेमी जे पुरारि पद कंज के मधुप जैसे, तिनसो बढ़ाय रीति प्रीति मैं भरयो करो ॥ कबहूं कुचालिन के नेरे जनि जाहु तात, दूरहि ते देखि तिन्हैं नाग ज्यों डरयो करो ॥ संतन के सुभग सनेह सों सने जे बैन त्योंहीं दैन चैन उर ऐन मैं धरयो करो ॥ हीय हरषाने नहिं यामें अरसाने कभूँ, हरदम हमारे मन हर हर करयो करो ॥१४३॥

कवित्त

उठि कै प्रभात सुरसरि मैं अन्हात तात, पुलकि प्रसन्न

मन प्रभु पहँ चला करैं॥ नीर नहवाय दधि छीर ते पखारि गाय, मुदित मजे ते मलयागिरि मला करै॥ बिल्व दल लाय शुचि शंभु, जू बनाय वाहि, चावते चढ़ाय कर आरति बला· करै॥ हरदम हमेश हर समय हरे हे मन, हर हर हजारा उर अंतर हला करैं॥१४४॥

कवित्त

एरे मन भ्रमर भ्रमैना भूलि सूर सम, तम हग छायो धायो विपिन अधीक रे॥ पायो नहिं तोहू निज सुखद निवास थान, मान मति मेरी तेरी हित कर ठीक रे॥ मूरख अघाय लाय, अंजन चरण रेणु लोचन निहारु सारु काज निज: ही-क-रे॥ दौर हौर हौर अब 'शंभु'पद पद्म ठौर, पौर पौर लेवै रस चित चंचरीक रे॥१४५॥

कवित्त

राजत रजत गिरि श्रृङ्ग संग भृङ्गी गण, षणमुख सुत सोह मोद गोद माँके हैं॥ ताके त्रैनैन ते जला के मैन चैन करि, सैन युत भूत प्रेत रहत सदा के हैं॥ खाके विष भंग औ रमाके भस्म अंग गंग, शंभुत्यों जटानहु को शीश पै जमा के हैं॥ मेरि कै कजा के सुख सुंदर सजा के, देत मौज औ मजा के वर बाँके गिरिजा के हैं॥१४६॥

कवित्त

सोहत जटान मध्य सुरसरि धार पार, पावत न श्रुति शास्त्र सुंदर विचार कर ॥ त्रैनयन ज्वाल माल मुंडन विशाल तन, ब्यालन के जाल करि केहरि के खाल वर ॥ कर मैं त्रिशूल शूल हरत हजारन को, काटि यमफंद जन 'शंभु' को समोद कर ॥ भाल चंद नीके सँग बाल गिरि नंदनी के, भक्तन को भुक्तिमुक्ति देत हैं हमेश हर ॥१४७॥

कवित्त

मुकुट विराजै जटा जूटन को शीश मध्य, लोचन विशाल वन्हि शशि औ दिनेश के ॥ बाल चंद भाल माल सोहैं गर मुंडन के शोभित विचित्र वर भूषण फनेश के ॥ तजि गृह काम को बखानै शेष आठो याम, तबहुँन जाको गुण रंचहु भनै सके ॥ संग लै भवानी देत जन मन मानी मौज, सानी है न देव दानी दूसरो महेश के ॥१४८॥

कवित्त

अति बलवान ए महान मद कारी मार, त्योंहीं कोप कठिन कराल बल कारै है ॥ लंपट त्यों लोभ करै क्षोभ बहु बार बार, मोह मद मत्सर मरोरि मोहिं मारै है ॥ ए सब सहाय कछु मेरो ना वसाय हाय, बिनु 'शंभु' नाथ अब मोहिं को उबारै है ॥ पालिए प्रणत पाहि शंकर पुकारों काहि, पातक शत्रसुर मोहिं पटकि पछारै है ॥१४९॥

कवित्त

बाढ़यो है गरब याको गज सो गजब हाय, अंधक सा अजब अकृति बल जूटि है ॥ पातक पुरान जोर जालिम जमात लै कै, जीवहिं जकरि के हमारो मन लूटि है ॥ ताते बिलखात अलसात क्यों हमारी बेर, टेर सुनिबो को तौ समाधि कब छूटि है ॥ सुनि हौ पुकार जौ अनाथ कौन 'शंभु' नाथ, निबल निहारि यह मोको खूब कूटि है ॥१५०॥

कवित्त

मेरो मन चलिहै कुपंथ निशिबासर जौ, आप करि नेह नीकी राह दरसाय हौ ॥ भावै भलि याहि रीति अधम अधर्म की जो, जौ पै आप धर्म, करि जतन जनाय हौ ॥ नेकहु सकाय हैं न 'शंभु' निज उर माहिं, जौ पै आप आपु बहु दंड कै डराय हौ ॥ बिकल बिचारि पद प्रणवों पुरारि मोहिं, पातक ते कैसे कर शंकर बचाय हौ ॥१५१॥

कवित्त

व्यथित विशेष आजु चित चंद्रचूड़ जू है, अजहुं अनाथ जानि मोहिं अपनावते ॥ मंजु मन भावनि महेश पद भक्ति दान, दे कै दीनबंधु दया दृष्टि दरसावते ॥ बार बार मेरो मन शरण सिधारो चहै, होत ना प्रवेश ताते यों हीं उर आवते ॥ अघबृंद आलय निहारि मोहिं आशुतोष, निपट निकाम जानि मो कहँ दुरावते ॥१५२॥

कवित्त

मो कहँ दुराइहौ जौ शंभु शरणागत सों, मोते ए वियोग ना सहे ते सहि जाइहै ॥ बाढ़े सु सनेह को बिगड़िबो बिथा है बुरी, कठिन कलेश ना कहे ते कहि जाइ है ॥ आजु लौं न ऐसी कहूं भई है न होनहार, बाहीं गहि कोऊ काहु कबहूँ बिहाइ है ॥ स्वतन निहारि जनि मोतन बिलोकौ अब, आजु कर मेरो नाथ नीके कै गहाइ है ॥१५३॥

कवित्त

नीको नाम रावरो दुनी मैं दीनबंधु परो, ताते हौं दयाल दीन बचन सुनीजै जू ॥ अधम उधारन त्यों आप को अशेष यश, अखिल भुवन भरो गरुता गुनी जै जू ॥ प्राणनाथ शंभु अवलोकहु अपाने तन, मेरे अपराध पै न नेक दृष्टि दीजै जू ॥ शरण सिधारो ताहि निरखि नकारो, कारो तिलक लगाय हाय बिलग न कीजे जू ॥१५४॥

कवित्त

दीनबंधु पतित उधारन तुम्हारी सबै, जानत जहान बानि दुरितै दरन की ॥ निजै अवलोकि महा पतित शिरोमणि मैं, सीधी धरयो शंभु राह सामुहे शरन की ॥ जप यज्ञ दान कीन्हें बहु तप ध्यान कीन्हें, छूटि है न बानि मेरी पातक करन की ॥ होइए हमारे सम टेकी जौ त्रिलोचन जू, साँची करो बानि निज पातक हरन की ॥१५५॥

कवित्त

आयों अति दीन त्यों अधीनन शिरोमणि मैं, शरण तुम्हारे नेक मोतन निहारिहौ ॥ सुनि बिनु कारण बिशेष जन दीनन पै, सहज सनेह सदा राखत पुरारि हौ ॥ मेरी गहि बाँह प्रतिपालिहौ न 'शंभु जू' जौ मोहिं निज प्रकृति प्रतीति किमि पारिहौ ॥ अधम उधारन कहाइहौ कहहु कैसे, जौ पै आज शंकर न मो कहँ उधारिहौ ॥१५६॥

कवित्त

दीन तन छीन दीनबंधु ए रहै पै कभूं, विपुल विभूति पाय मूढ़ बौरावै ना ॥ दुष्ट त्यों दरै दर दुरायो जाय 'शंभु-नाथ' मेरो मन मान पाय मोद मढ़ि जावै ना ॥ रावरे के शरण सिधारिवो सुधारिबो सो, ताको तजि मूरख ए कतहूँ सिधावै ना ॥ आठो याम कामरिपु नाम रट लाइबे को, कैसेहु कै मेरो मन मूढ़ बिसरावै ना ॥१५७॥

कवित्त

न्याय की निकाई जिन सुकृत कमाई कौन, शोभा महा-राज माफी मो सम अधीन पै ॥ रावरे के रोष को जु होय रावरे के सम, शोभा है दयालुता की, मो सम दुखीन पै ॥ संपति समेत सुत शंकर दुरायो जाय, शोभा प्रतिपालन की मोसम अधीन पै ॥ हर भाँत नाथ 'चंद्रशेखर' तुम्हारे हाँथ बेगिही दयालु, दाया कीजिए सुदीन पै ॥१५८॥

कवित्त

जोतिष ते जाने जे अनेक अनुमाने मेरे, औगुण अहित सो तो एक अजहूँ न भा ॥ ताके विपरीत इमि रावरी कृपा ते शंभु, उदय अदृष्ट को हमारे अब जू न भा ॥ कीन्हे 'चंद्रशेखर' करोरिन करम कूर, तवहूँ शरीर मों सपंकन ते सून भा ॥ लखि रावरे की प्रभुताई यों पुरारि प्रभो, आजु उर मेरे परतीति दृढ़ दून भा ॥१५६॥

कवित्त

नेरे रहे नीक गए दूरहु रहैगो ठीक, होयगो न फीक सदा स्वादु मैं सुहायगो ॥ त्यों हीं दिन दूनो रात चौगुनो सुनो हो हर, रावरी कृपाते उर अंतर भरायगो ॥ होय जो सँयोग 'चंद्रशेखर' भलो सो अति, होतेहि वियोग यो विशेष बढ़ि जायगो ॥ गेह तजे देह तजे कैसेहु न कौन्यूँ भाँति, कबहूँ न नेह मेरे हिय ते हिरायगो ॥१६०॥

कवित्त

चाहौ तौ सुमेरु करौ छार छनहीं मैं आप, छार को करौ हो सौ सुमेर सम चाहौ तौ ॥ चाहौ चक्रवर्तिहिं भिखारि को भिखारि करौ, निपट भिखारि चक्रवर्ति करौ चाहौ तौ ॥ चाहौ तौ नराधम को भक्त शिरताज करौ, भक्ति मद भूले करौ अधमाधिप चाहौ तौ ॥ चाहौ तौ बसावो चित माहिं 'चंद्रशेखर' को, खर भाँति खेदौ महा मरु देश चाहौ तौ ॥१६१॥

कवित्त

जाने अनजाने जेते होत हैं मलिन मोते, निज तन ताकि तेते शंकर हरे रहौ॥ त्योंहीं उर अंतर हमारे हर नीकी भाँति, भोलानाथ भक्ति भलि आपनि भरे रहौ॥ हौं तो पहि योग नाहिं, कबहूँ न होनेहु हैं, तबहूँ कृपालु कृपा मोपर करे रहौ॥ जैसे 'चंद्रशेखर' धरे हौ हाँथ आजु तैसे, जुग जुग जन्म जन्म शंभु जू धरे रहौ॥१६२॥

कवित्त

मोकहँ प्रतीति परिपूरन परी है मेरे, पाप पुराचीन औ नबीनहु हरैंगे ए॥ त्यों हीं 'चंद्रशेखर' कृपालु हैं बड़े ही हर, दीन जन जानि कृपा मोपर करैंगे ए॥ सारे शत्रु दल सह काम क्रोध आदि खल, इनके कराल रोषानल मैं जरैंगे ए॥ आजु चहै कालि किम्बा कछु दिन टालि उर, भक्ति निज भलि भाँति अवशि भरैंगे ए॥१६३॥

कवित्त

रमि रह्यो राग रोम रोम मैं महेश मानो, विष मुहँ लाग त्याग अमिय अचैंगे क्यों॥ जग की जलूसैं रहीं जमकि जिए मैं ताते, होवहिं विमुख ऐसे बचन जचैंगे क्यों॥ नाचत हैं नीकी भाँति धनिकन द्वार जाय, रावरे समीप ह्वै कै निलज नचैंगे क्यों॥ वारिधि विषय बीच मग्न 'शशिशेखर' हैं शंभु पद पद्म पोत विगत बचैंगे क्यों॥१६४॥

कवित्त

जिनके लिलार लिखि दीन्हें हैं विरंचि अंक होय यह रंक मूढ़ जाय मड़वार मैं ॥ असन बसन हीन दीन तन छीन त्योंहीं, बदन मलीन लीन बिपति झवार मैं॥ ऐसे हत भागी 'चंद्रशेखर' शरण आय, भए बड़भागी दीख नैनन हज़ार मैं ॥ कोटिन अनाथ नाय नाय पद माँथ सदा, होत हैं सनाथ विश्वनाथ दरबार मैं ॥१६५॥

कबित्त

परम पुनीत बारि शीश पै चढ़ाय पुनि, कुंकुम मिलाय बहु गंध गंधसार मैं ॥ विल्व दल लाय दृग देखत सुहाय ऐसे, गुञ्ज गुहि सुमन चढ़ावैं बहु बार मैं ॥ त्योंहीं 'चंद्रशेखर' जू धूप अरु दीप करि, भाँति भाँति भोगहु लगावैं, शुचिथार मैं ॥ कोटिन अनाथ नाय नाय पद माँथ सदा, होत हैं सनाथ विश्वनाथ दरबार मैं ॥१६६॥

कबित्त

औरन की बिरद न जानौं ना बखानौ कछु, हम तौ हमेश हर ही के गुन गावते ॥ त्यों ही नाहिं औरन की बंदना करौं हौं सदा, संतत स्वशीश शंभु जू के पद नावते ॥ औरन ते आशह्व न राखौं कछु पायबे की, शंकर ते परम प्रमोद हम पावते ॥ औरन की अजब अनोखी छबि चोखी होय, मन 'शशिशेखर' के भोलानाथ भावते ॥१६७॥

कबित्त

राख्यौं मैं लुकाय दृढ़ बंधन बँधाय, बाम, सुत धन धाम के मंजूषा माँहि महते ॥ तवहूँ न जानै कब कैसे प्रगटाय रैनि, प्रेम की, चुरायो चित्त मेरो तुम तहँते ॥ ऐसी अति विपति बखानैं 'चंद्रशेखर' जू, ब्यास बामदेव शुक आदि कहूँ लहते ॥ कोऊ सुर असुर न नाग नर कौन्यूं भाँति, कबहूँ न कैसेहु निदोष तुम्हैं कहते ॥१६८॥

कबित्त

मूढ़ मति हीन औ मलीन पाप लीन महाँ, कबहूँ न कीन सुधि बुधि के सम्हार को ॥ ऐसो हत भागी जग जागीं है कुजश जासु, श्रवण सुनै को तासु विपति गमार को ॥ त्यों हीं 'चंद्रशेखर' बिहाय कै धरम निज, हाय जो करन लाग करम चमार को ॥ भोलानाथ भूतनाथ सुनिए अनाथ नाथ, तुम बिन नाथ पेट भरिहै हमार को ॥१६९॥

कबित्त

कौन विनु सूर करै कमल प्रफुल्लित औ, चंद विनु तैसेहि चकोर को रिझावै कौन ॥ कौन विनु नीर मीन मुदित करै त्यों, बिनु, मानसरवर के मराल मन भावै कौन ॥ कौन विनु स्वाति करै चातक तृषा को दूर, अंबुज बिनाहीं अलि पुञ्जन अघावै कौन ॥ कौन बिनु हर के हमेश हरषावै जन, हिय मैं हमारे 'चंद्रशेखर' समावै कौन ॥१७०॥

कबित्त

सूधो अति कूधो महा पंडित अपंडित हौं, मूरख महान किंवा सब गुणग्राम हौं॥ ज्ञान वान अथवा हौं अज्ञ सर्वज्ञ सुनो, पुण्यवान हौं वा पुंज पातकन धाम हौं॥ परम उदार मैं कहावौं वा कृपिण शंभु, सत्यव्रत दंभी बद्जात नेक नामहौं॥ निपट निकाम नीक खरो वा बुरो हौं हर तौ हू 'चंद्रशेखर' मैं रावरो गुलाम हौं॥१७१॥

कबित्त

जा दिन ते लीन्हों जग जन्म जीव तादिन ते, पापहि मच्यो ना पुण्य जनि है जनाए ते। पर अपवाद पर नारि पर धन प्रेम ऐसे अघ पुंजन को गनिहै गनाए ते॥ अजहूँ न मूरख महान मन मेरो प्रभु, कोटिहु किए ते मेरे मनि है मनाए ते॥ सुधरै न और के सुधारे 'चंद्रशेखर' जू बिगरी तुम्हारे नाथ बनिहै बनाए ते॥१७२॥

कबित्त

लैयो जनि रोष चित नेकहु कृपानिधान, कीन्हे अपराध कोटि कुरुख चितैयो ना॥ दैयो जनि त्यों हौं दृग मेरे कृत कर्मन पै, पावन पतित बानि कैसेहु भुलैयो ना॥ जैयो जनि शंभु टरि मेरे उर अंतर ते, उकसे नवीन नेह अंकुर नशैयो ना॥ जानिकै अज्ञान जन दीन 'चंद्रशेखर' जू, मनते महेश कभूँ मोको बिसरैयो ना॥१७३॥

॥ दारिद त्रिशूल ॥

कबित्त

घेरि लीन्हों घन सो घुमड़ि चहुँघा ते खूब, पश्चिमक प्रचंड प्रेरि पल में उड़ाइए॥ बाँधि दीन्हों बंधन सों मेरे अंग अंगन को, भाखैं 'चंद्रशेखर' तड़ाक ते तुड़ाइए॥ जाने नहिं रावरे प्रभाव को पुरारि यह, मन्मथ सो याके महामद को मुड़ाइए॥ दारिद दवानल सों जरत जनहि जोनि, वेगिहि दयालु दाया द्रव ते जुड़ाइए ॥१७४॥

कबित्त

कीन्हीं यह ऐसी जैसी आजु लौं न देखी हुती, अजब अनैसी महा कठिन कुचालिए॥ कैसी करूँ सोऊ मोहिं सूझत न शंभुनाथ, वैसी करि लीन्हीं तन घातन सों घालिए॥ झैसी गई मति गति हैसी गई बावरी ज्यों, रावरी सों साँची कहौं जानो जनि जालिए॥ दैसी गई दुख सिंधु दारिदता दीनबंधु, भाखैं 'चंद्रशेखर' कृपा कै मोहिं पालिए ॥१७५॥

कबित्त

काहू ढिग कतहूं दिखात है न मोको चैन, प्रवल प्रतापहि घेरि लीन्हें रिपु सैन जोरि॥ ताते दिन रैन उर ऐन में हमारे हर, शांति है न भ्रांति सों भई है मति अति भोरि॥ लैन चाहै जीव ए बखानैं 'चंद्रशेखर' जू, मारिए महेश याहि मैन सो

मदहिं मोरि ॥ बैन सुनि लीजै दीन ओर दृग कोर कीजै, जन सुख दीजै महा दारिद दशन तोरि ॥१७६॥

सवैया

कबहूँ कल बाल विनोद करैं, पितु मौलि मयंकहिं धाइ धरैं ॥ किलकै कबहूँ लखि माल कपाल, फनीश फनै लखि भाजि दुरैं ॥ जननी गहि अंक दुलारि मनोहर, आनन चूमि सुमोद भरैं ॥ प्रिय भाजन 'शंभु' गणेश सदा, मम मानस मंदिर में बिहरैं ॥१७६॥

सवैया

अवलोकन को अरविंद सो आनन, क्यों अँखिया न अनेक भई ॥ करिवे को कथामृत पान सदा, किन सुंदर श्रोत भए न कई ॥ शुचि कीरति 'शंभु' बखानिवे को, मति मंजुल भूरि भली न ठई ॥ गुण गाइबे को गिरिजापति के, कस कोटिन जीह दई न दई ॥१७७॥

सवैया

पदकंज पुरारि को पाइ गह्यो, नहिं नीकी लगैं लतिकान लुनैया ॥ चोखे लखैं चख चंद चकोर, न भूलि लखैं नभ भूरि तरैया ॥ 'शशिशेखर' सों सरस्यो सु सनेह, गनों गरुतानहिं नाक बसैया ॥ सरिता पति शंभु समीप बस्यो, भलि भावहिं मोहिं न तुच्छ तलैया ॥१७८॥

सवैया

हेरु हरे हिय मैं हित के हित, हे हमरे मन मंद मलीना ॥
जेते लखात सुता वनिता सुत, संपति सो कछु साथ चलीना ॥
पैहौ न लोमश सी चिरजीवित, कालते कोटिहु दाल गलीना ॥
भूलेहु जौ भवके पद पंकज, 'शंभु' भनै केहु भाँति भलीना ।
॥१८०॥

सवैया

पाइ मनुष्य शरीरहु को, तवहूँ नहिं आपन मुक्ति बनायन ॥
सुंदर पौरुष पुत्रन को, धन धान्य लखे मद माँहि समायन ॥
लंपट चोर लबारन के ढिग, वैठि सबै निज धर्म नशायन ॥
का उनकी गति ह्वै हैं दई, जो करी नहिं प्रीति उमापति पाँयन॥
॥१८१॥

सवैया

जस मन्मथके मद के सरसे, पर नारि पियारि लगै हर जू ॥
जस आपुहि पूतन के प्रति मैं, उरमैं अनुराग जगै हरजू ॥
जस दारिद के दुख भोगत मैं, चित संपति पाइ पगै हरजू ॥
तस प्रीति प्रभो पद पंकज मैं, मम भूरि लगै न डगै हरजू ॥
॥१८२॥

सवैया

विपरीति विश्वेश्वर के पद सों, मति मोरि मलीन नसी सो

...सी ॥ शुचि कीरति त्यों 'शशिशेखर' की, श्रुति संपुट माहिं धसी सो धसी ॥ लखि लोनी सुनाम महामणि की, रसना महँ माल लसी सो लसी ॥ मृदु मूरति मंजु महेश्वर की, मन मंदिर माँझ बसी सो बसी ॥१८३॥

सवैया

जो निरखे हरखे हर रूप न, ताकहिं जो तन तोय तरेरी ॥
जो सुनि मोद लहैं नहिं कीरति, राखहिं प्रीति जो गीति परेरी ॥
जो रस के बस है अरुझी नहिं रैनि दिना शिव नाम ररेरी ॥
नैन निकाम बरै सो सरै श्रुति, त्यों 'शशिशेखर' जीह जरेरी ॥
॥१८४॥

सवैया

यों अब कीजै महेश कृपा, उर अंतर कोप कृशानु बलैना ॥
त्यों पर नारिन के चितवे को, कभूं यह चंचल चित्त चलैना ॥
लालच भूरि बढ़ाय मेरे मन, शंभुजू, लंपट लोभ छलैना ॥
आपति क्यों न अनेक पड़ै, हमरे हियते हरप्रीति हलैना ॥
॥१८५॥

सवैया

तुम दीनदयालु कृपालु सुनौ, बिनती बिसराइ कै दोषन जू ॥
करनी नहिं नेक बनी हमरी, तेहिते बहु पावत शोकन जू ॥
शरणागत के सुखदायक हौ, निज ओरि करौ अवलोकन जू ॥

'शशिशेखर' दास को दुःख बनै, अब मोचन कीन्हे त्रिलोचन जू ॥ ॥१८६॥

सवैया

यह आश लगी कबसों हमरे हिय, ते मद को कबधौं हरिहौ ॥
मदनारि महा रिपु जानि इन्हैं, मदनादिक को कबधौं जरिहौ ॥
मन भावनि भक्ति सु आपनि शंभु मेरे उर मैं कबधौं भरिहौ ॥
शरणागत स्वीकृत शंकर कै, 'शशिशेखर' को कबधौं तरिहौ ॥
॥१८७॥

सवैया

कतहूँ चलि जाँय न जावहिं वा, नव नेह लग्यो सो लगावोहिगे ॥
सुख सोवहिं मोह के गोद भले, निज ओर चितैकै जगावोहिगे ॥
बहु जोरहिं पाप पहार सोऊ, पल मैं सब आप नशावोहिगे ॥
'शशिशेखर' मूरति रावरी मोहिय, माँझ बसी सो बसावोहिगे ॥
॥१८८॥

सवैया

काहे कहैं अपने मुखते, अपनी करनी न कभूँ कहि सक्कई ॥
हंस सो वेष बनाय कै काग, सदा जनसों धन को शठ ठक्कई ॥
त्यों 'शशिशेखर' नीचनिरंतर, पापि रहे परनारि असक्कई ॥
काम महा यों निकाम करै, पै जनात है लोगन को बड़ भक्कई ॥
॥१८९॥

सवैया

मेरे महा मदको हरिकै, हमका-ई कहौ कि कबै हरषै हौ ॥
हे हरजो हमरे हिय मैं, भक्ति भक्ति कहौ कि कबै सरसै हौ ॥
त्यों 'शशिशेखर' के करसों, पद कंज कहौ कि कबै परसै हौ ॥
मोर दीन दयालु दया वर, वारि कहौ कि कबै बरसै हौ ।
॥ १९० ॥

सवैया

मन मेरे को देव महेश सुनो, यह काम रु क्रोध छरो छल है ।
तिमि प्रेरक है हमरे हियके, मोहिं छाँड़ेउ मूढ़ खरो खल कै ॥
अब आजु दयालु दलो इनको, जनि वादो कृपालु करो कल कै ।
'शशिशेखर' के उर अंबुधि मैं, अपनी भलि भक्ति भरो भल कै ॥
॥ १९१ ॥

सवैया

अब तो परतीति परी हमको, हम काहे पुराण पढे हि करैं ।
तजि क्यों नहिं औरन को हम त्यों, सरकारके द्वार अड़े हि करैं ॥
'शशिशेखर' यों जग मैं सबके शिर, आपति आय पड़े हि करैं ।
तुम्हरे प्रति शंभु दिना हि दिना, हमरे चित चोप चढ़े हि करैं ॥
॥ १९२ ॥

सवैया

नेकु नहीं मन को वस राखत, चंचल चित्त के चाल चले हैं

मत्त भए मदनादिक के मद, क्रोध दवानल ज्वाल जले हैं ॥
लोलुपता लखिकै विषयानि मैं, यो 'शशिशेखर' ग्लानि गले हैं
मोसों सुनो शिवशंकर जू, खर शूकर श्वान शृगाल भले हैं
॥ १६३

सवैया

लागहुँ कारज आनहि आन मैं, पै पलहू मति नाहिं थिरावै ।
चितहुँ जौ कछु आनहि आन तौ, आनि सोई चित माहिं समावै ।
क्यों न उपाव करोरि करौं, सुरझै नहि सो अरुही अरुझावै
यों ही कहैं 'शशिशेखर' जू, हरही की हमेश हमैं सुधि आवैं
॥ १६४

सवैया

और कछू न रह्यो घट मै, परि पूरण आप अमाय रहे हैं ।
अंकु उखारि सबै जियते, निज नेह को बीज जमाय रहे हैं ॥
त्यों 'शशिशेखर' रोमहि रोम मै, शंभु स्वरूप रमाय रहे हैं ।
कैसेहु क्यों हू न काढ़े कढैं, हर ऐसे हिए में समाय रहे हैं ।
॥ १६५

सवैया

तजिकै तुमका जु लखौं जगको, तेहि ते इन नैनन को धिक है
जेहि जीह सों कीरति रावरि छाँड़ि, बकौं बहु आनहि सो धिक
है ॥ श्रुति ते-जु सुनौं यश त्यागि तुम्हार, प्रपंच अपारन सें

धिक है। तुमका तजिकै धनको जु धरों, हिय में 'शशिशेखर' सो धिक है ॥ १६६ ॥

सवैया

आनि सुशीतल वारि सदा, शिवलिंगन को अन्हवायो करै जू ॥
चंदन चर्चित कै 'शशिशेखर', बिल्वदलानि चढ़ायो करै जू ॥
धूपऽरु दीपहु कै पुनि त्यों, बहुभाँतिन भोग लगायो करै जू ॥
तार यही करतार करो; मन मेरो महेश मनायो करै जू ॥
॥१६७॥

सवैया

जेहि के मन में न महेश बसे, नहिं जान्हवि को जननी जनई ॥
नहिं मात पिता पद बंदत मूढ़, न भूसुर को सुर सो गनई ॥
न सुनी शठ सीख गुरू जनकी, जु हरीहर कीरति ना भनई ॥
अस पूँछ बिहीन महापशु को, कहि है किमि कोउ कवी 'मनई'॥
॥१६८॥

सवैया

कोउ आवहि मोसम दीन जो द्वार, तौ तापै दया करि दीन करौ ॥
तिमि सोवत जागत रात प्रभात, सदा हर नामहि लीन करौ ॥
जग जीवन है कछु कालहि को, तेहिते अभिमान न कीन करौ ॥
शिवके पद अंबुधि में 'शशिशेखर' जू अपनो मन मीन करौ ।
॥१६९॥

सवैया

नहि जौ जग नायक जानि सदा, मन लाइ महेश मनावहु गे ॥
करि प्रीति प्रतीति सों जो मति को, सत संगति मैं न सनावहुगे॥
द्विज देवन के पद पंकज मे, अनुरागि जौ शीश न नावहु गे ॥
'शशिशेखर' साँची कहौ हमसों, बिगरी केहि भाँति बनावहुगे ॥
॥२००॥

सवैया

करो जो चहो तो सदैव सहर्ष, सदाशिव को सेवकाई करो ॥
टरो जो चहो तो बुरे जनते, जिनके हिय ते मद नाहिं टरो ॥
डरो जो चहो द्विज देवनते, नहिं सो भल जो इनते निडरो ॥
तरो जो चहो 'शशिशेखर' सों करि प्रेम तरो तुमहूं पितरो ॥
॥२०१॥

सवैया

धरो जो चहो तो शिवा सँग मंजु, सदा शिव ध्यान हिए में धरो ॥ परो जो चहो निज मात पिता गुरु, विप्र पुरारि के पाँय परो ॥ भरो जो चहो तो प्रतीति सों, जीवन, लौं निजधर्म को कोष भरो ॥ मरो जो चहो, 'शशिशेखर' तो, एहि मुक्तिदा काशी मँझार मरो ॥२०२॥

सवैया

ररो जो चहो तो रमापति राम, उमापति शंकर नाम ररो ॥
लरो जो चहो तो महा कलि ते, 'शशिशेखर' है करिबद्ध लरो